चकमक

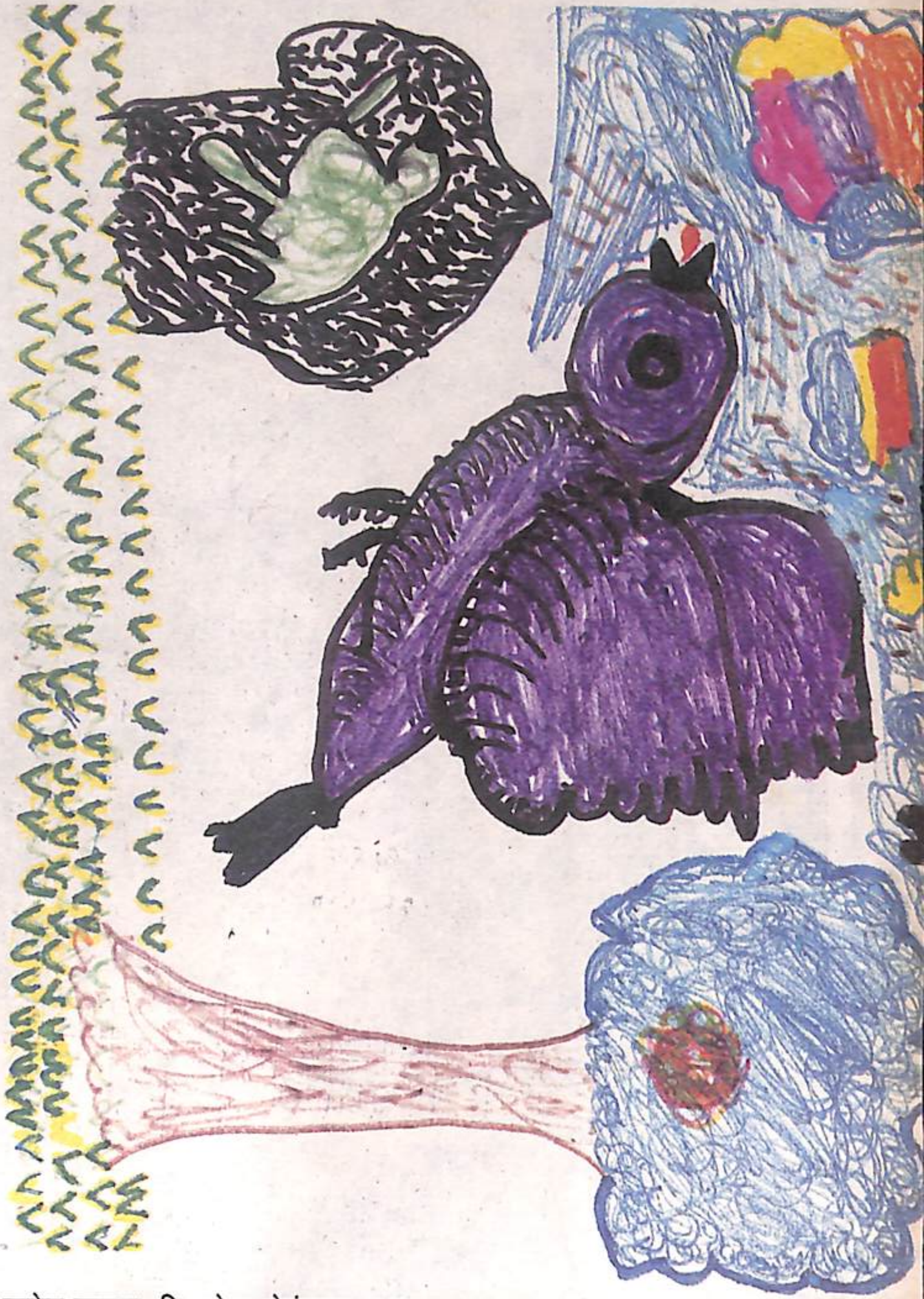
दिसम्बर, 1994 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00



भोपाल गैस त्रासदी के दस साल



विकल्प, तीसरी, देवास, म.प्र.



जसोदा कुशवाह, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.



योगेश वर्मा, तीसरी, महिदपुर, उज्जैन, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-10 अंक 6 दिसम्बर, 1994

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक ख़र्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)

112 वें अंक में ....

विशेष

2 ❑ अलविदा : सौम्या
10 ❑ भोपाल गैस त्रासदी
34 ❑ श्रद्धांजली : निरंकार देव सेवक

कविताएँ

9 ❑ गैस ने बेनिशां किया..
35 ❑ लाल टमाटर

कहानी

18 ❑ नन्हीं राजकुमारी और चन्द्रमा

धारावाहिक

37 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?-16

हर बार की तरह

3 ❑ मेरा पन्ना
15 ❑ हमारे वृक्ष- 32 : नीला गुलमोहर
16 ❑ खेल कागज़ का
28 ❑ चित्रकथा : क़िस्सा आफन्ती का
32 ❑ माथापच्ची

और यह भी

26 ❑ सवालीराम
30 ❑ आओ सर्वे करें
36 ❑ तुम भी बनाओ : मुखौटे

आवरण परिचय

भोपाल में यूनियन कार्बाइड कारखाने के सामने लगी माँ- बच्चे की मूर्ति। इसके नीचे लिखा है- 'हिरोशिमा नहीं, भोपाल नहीं, हम जीना चाहते हैं। उन हज़ारों लोगों को समर्पित जो 2 और 3 दिसम्बर की रात बहुराष्ट्रीय हत्यारे यूनियन कार्बाइड के हाथों मारे गए।'

मूर्ति बनाई थी रूथ वाटरमैन और संजय मित्रा ने और लगवाई नागरिक राहत और पुनर्वास कमेटी ने। छायाचित्र : भानु प्रकाश तिवारी, भोपाल

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

सम्भावनाओं से भरी : सौम्या



चकमक में सोमू का बनाया पहला चित्र सितम्बर, 91 के पिछले आवरण पर प्रकाशित हुआ था। यह अंक पैसा यानी मुद्रा पर केन्द्रित था। सोमू ने अपना चित्र भी पैसे को ध्यान में रखकर बनाया था। दिसम्बर, 92 के दंगों ने भोपाल को झुलसाकर रख दिया था और तब नन्हीं सोमू के रंग भी इससे बच नहीं सके थे। फरवरी, 93 के अंक के पिछले आवरण पर प्रकाशित उसका चित्र दंगे की भयावहता को बताता है। इस साल मार्च, 94 में प्रकाशित चित्रकथा 'मोज़ों से दावत' तुम अभी भूले नहीं होगे। इस कहानी के लिए भी सोमू ने एक चित्र बनाया था, जो पिछले आवरण पर ही प्रकाशित हुआ था। चकमक के सौवें अंक में भी उसकी एक कहानी थी। उसकी याद करते हुए इस अंक के पिछले आवरण पर उसका एक और चित्र दे रहे हैं।

इस मुस्काते चेहरे वाली लड़की को शायद तुम न पहचानते हो, पर इसके नाम से ज़रूर परिचित होगे। चकमक जुलाई, 94 में मेरा पन्ना में छपी उसकी कहानी दास्तान-ए-कमीज़ तुम्हें याद होगी।

यह मुस्काती लड़की अब हमारे बीच नहीं रही। साढ़े तेरह साल की **सौम्या सुरेश** का, जिसे उसे जानने वाले प्यार से सोमू कहते थे, गत 29 नवम्बर, 94 को निधन हो गया।

सोमू में अनंत सम्भावनाएँ थीं। इस छोटी-सी उम्र में उसने 25 से अधिक नाटकों में अभिनय किया था। जंगल जातकम्, मृगछौने, खामोश अदालत जारी है, यरमा, झूठासच, ब्रह्मास्त्र आदि उनमें प्रमुख हैं। उसने बच्चों के लिए एक नाटक भी लिखा था। अपने मोहल्ले के हमउम्र साथियों के साथ मिलकर एक अनियतकालीन सायक्लोस्टायल पत्रिका 'गुलदस्ता' का सम्पादन और प्रकाशन भी वह कर रही थी।

रंगों से सम्भवतः उसे सबसे ज़्यादा प्यार था। सभी तरह के माध्यमों के रंगों का इस्तेमाल सोमू ने अपने चित्रों में किया है। उसकी ज़्यादातर पेंटिग अमूर्त हैं। लेकिन बालसुलभ संवेदना भी उनमें झलकती है।

उसे अपने चित्रों के लिए स्थानीय प्रतियोगिताओं में कई पुरस्कार मिले। उसके चित्रों की एकल प्रदर्शनी डाक तार विभाग ने बाल दिवस के अवसर पर 1992 में लगाई थी।

सातवीं कक्षा की छात्रा सौम्या उम्र की ऐसी दहलीज पर थी, जहाँ से सपने देखने, बुनने और उन्हें साकार करने की कोशिशों का दौर शुरु होता है।

चकमक की इस प्रतिभाशाली रचनाकार की मौत चकमक परिवार के लिए इसलिए भी अधिक दुखदाई है, कि सोमू चकमक के तमाम नन्हें पाठकों, नन्हें रचनाकारों की 'कविता दीदी' की इकलौती बिटिया थी।

चकमक उसे सलाम करती है! अलविदा सौम्या!

❑ चकमक टीम

उल्टा-पुल्टा

एक बार मैडम ने चार लड़कों को कमरा साफ करने को कहा जिसमें मैं भी था। हमारी कक्षा में झाड़ू नहीं थी। हम बगल वाली कक्षा से झाड़ू माँगकर लाए। और हम सब ने मिलकर काम किया। मैंने झाड़ू लगाई। दूसरे ने गीले कपड़े से ब्लेक बोर्ड को साफ किया, तीसरे ने टेबल साफ किया। चौथा पेपर से ट्यूबलाईट साफ कर रहा था तो ट्यूबलाइट उसके हाथों में आ गई। हमने सर को बुलाया और ट्यूबलाइट को रस्सी से बाँध दिया।

जब कक्षा साफ हो गई तो मैं और मेरे साथी ने कचरे को खोखे में भरा और फैंकने गए। बीच रास्ते में खोखा नीचे से खुल गया और सारा कचरा नीचे गिर गया। दूसरी तरफ से सर आ रहे थे। हम दोनों ने खोखे को ठीक किया और जल्दी-जल्दी कचरा भरकर कचरे को फैंक आए। और फिर हम सब लड़के नल के पानी से हाथ धोकर कक्षा में आ गए।

❑ बंटी, तेरह वर्ष, इटारसी, म.प्र.



अनुज चौहान, पाँच वर्ष, टिमरनी, म.प्र.

मैं और मेरी बहन

मेरी एक छोटी बहन है। उसका नाम श्रुती है। वह हर समय छोटी-छोटी बातों पर रोती रहती है।

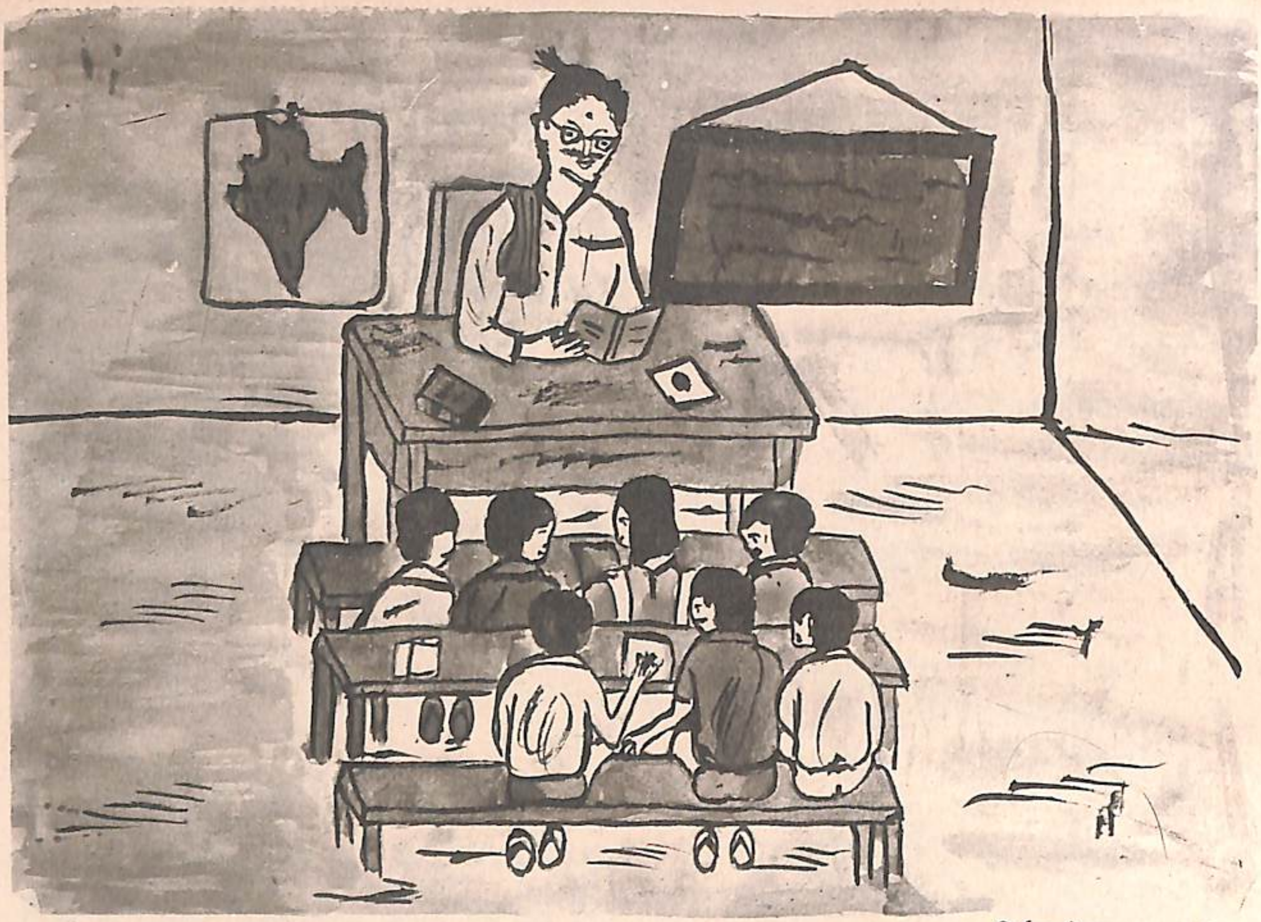
एक दिन की बात है मेरे हाथ से उसकी पेंसिल टूट गई। वह रो पड़ी। मेरी मम्मी आ गई और सारी बात सुन कर मेरे को एक चाँटा मारा। मम्मी के जाने के बाद मैंने उससे कट्टी कर ली।

और उसी शाम हमारी दोस्ती हो गई।

❑ वरुण कुमार, पाँचवीं, इलाहाबाद, उ.प्र.

पाठक और रचनाकार ध्यान दें। चकमक का पता इस अंक से बदल गया है। अब अपनी रचनाएँ, पत्र तथा चन्दा आदि इस पते पर भेजें-

चकमक
द्वारा एकलव्य, ई-1/25,
अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
म.प्र.



निर्मल गोयल, पटना, बिहार

स्कूल में देर से पहुँचे

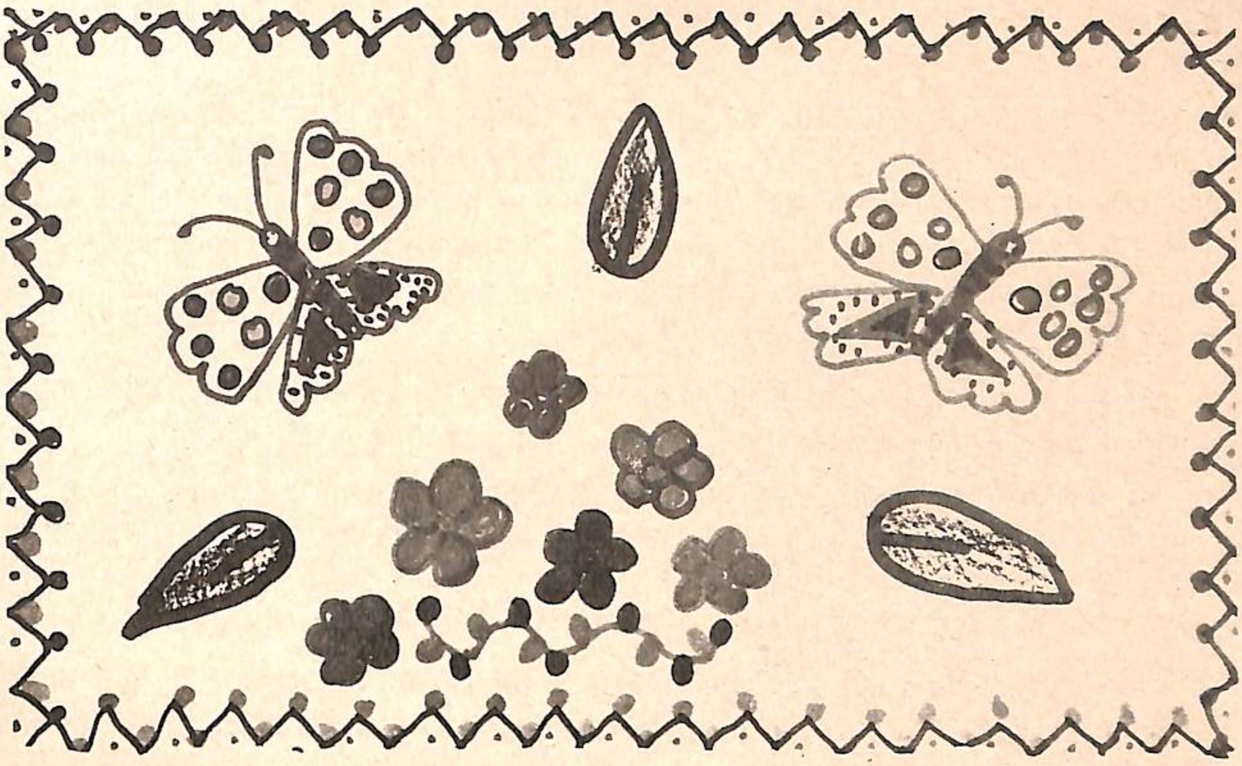
एक बार संगीता और मैं स्कूल जा रहे थे। अचानक हमने एक भिखारी देखा। वह अच्छा था फिर भी जान बूझकर अन्धा बन कर पैसे माँग रहा था। तो हमने उससे पूछा कि आपको आँखों से तो दिखाई देता है, फिर आप अन्धे बनकर पैसे क्यों माँगते हो।'

वह बोला कि, 'मैं अन्धा नहीं बनता तो कोई मुझे पैसा नहीं देता।' हमने उससे पूछा, कि, 'तुम कोई नौकरी या धन्धा क्यों नहीं करते?' तो वह बोला कि, 'नौकरी के लिए रिश्वत चाहिए और व्यापार के लिए पैसा तो फिर मैं क्या करूँ। अन्धा बनकर पैसा कमा लूँ फिर नौकरी करूँगा।'

यह सुनकर मेरी सहलियाँ हँसने लगीं। फिर हम स्कूल चले गए। हमें स्कूल में देरी हो गई तो हमारी टीचर ने हमें सजा दी और पूछा कि, 'तुम सब इतने लेट क्यों हुईं।'

हमने कहा कि, 'हम एक अन्धे भिखारी को देखने लगे थे। इसलिए हम लेट हो गए।' टीचर हमारी बात सुनकर हँसने लगी। उन्होंने हमारी बातें सच नहीं मानी। हमें एक पीरियड भर बाहर खड़ा होना पड़ा।

❑ मनोरमा सोनी, पोखरनी उबारी, होशंगाबाद



शुभा आचार्य, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

तितली

तितली उड़ती पंख पसारे
फूलों पर मँडराती है।
कितनी अच्छी कितनी प्यारी
तितली सबको भाती है।
रंग-बिरंगी तितली हमको
उड़-उड़कर दिखलाती है।
एक-एक करके ही तितली
फूलों पर ही जाती है।
कभी हाथ न आती तितली
फिर भी प्यारी लगती है।
तितली उड़ती पंख पसारे
फूलों पर मँडराती है।

❑ तितिक्षा प्रभाकर तेलंग, पाँचवीं, चापड़ा, देवास, म.प्र.



चीते से सामना

एक बार मेरा भाई पूनम और मैं हम दोनों गाँव जा रहे थे। हमारे पास एक घोड़ा भी था। उसका नाम सोनू था। हमारा घोड़ा बड़ा चालाक था। जाते वक्त तो हम पहुँच गए। वहाँ हम चार दिन रुके। हमारे दादा जी-दादीजी ने खूब आदर सत्कार किया। वहाँ से हम चले तो चलते-चलते हमें अंधेरा हो गया। वहाँ से गाँव का सफर पन्द्रह किलोमीटर का था। रास्ते में अंधेरा होने के कारण जंगल में एक चीता मिला। हमने उसे देख लिया और उसने जब हम दोनों भाईयों को घोड़े पर बैठे देखा तो चीता हमारी ओर दौड़ने लगा। मेरा भाई चीते को देख कर चिल्लाने लगा, "भाई देखो कोई बड़ा जानवर आ रहा है।"

मैंने घोड़े की लगाम को झटका दिया। घोड़ा तेजी से भागने लगा। और हम दोनों भाई घोड़े से नीचे गिर पड़े। मेरे घुटने में चोट आई। मेरा भाई बोलने लगा, "भैय्या तुम्हारे घुटने में चोट लगी है।"

हम दोनों पेड़ के पीछे छुप गए। मेरा घोड़ा अपनी जान बचाने के लिए वहीं कहीं छिप गया। हमारे पास दो चाकू थे। रात के अंधेरे में चीते की दो आँखें चमक रही थीं। मैंने एक चाकू मारा जो सीधा उसकी बाईं आँख में घुस गया। मेरे छोटे भाई ने कहा यह तो तुमने ठीक किया। चीता चीख मारने लगा। इतने में मैंने दूसरा चाकू उसकी दाईं ओर की आँख में मार दिया। अब उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

हमने बाजू में छिपे सोनू को धीरे से आवाज़ लगाई, "सोनू आ जा।" सोनू आ गया। मैंने चीते की पूँछ को घोड़े की पूँछ से बाँध दिया। और हम उस पर बैठ गए। चीता तो परलोक चला ही गया था और हम दोनों भाई बैठकर सुरक्षित गाँव में आ गए। चीते को पूरे गाँव में दिखाया।

❑ श्रवण कुमार, मदनलाल, छठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद (म.प्र.)



तुलसीराम चढ़ार, छठवीं, धतूरिया, भोपाल, म.प्र.



गड़बड़ है

माँ अपनी माँ से क्यों कहती अम्माँ
खुद को हम से क्यों कहलाती मम्माँ
माँ से पूछो तो कहती मतकर बड़बड़
सब गड़बड़ है सब गड़बड़
जब मैं छोटा-सा था
शायद ज़्यादा मोटा-सा था
नाम था मेरा लड्डू
पता नहीं कब मुदित बन गया
पापा से पूछो तो कहते मत कर बड़बड़
सब गड़बड़ है, सब गड़बड़
पापा जाते डेली दफ़्तर
लौटकर पढ़ते मज़े से पेपर
खाना, कपड़े, बाहर सर्विस
लौटकर फिर घर की सर्विस
मम्माँ करती इतना काम
दादी से पूछो तो कहती मतकर बड़बड़
सब गड़बड़ है सब गड़बड़
व्हॉट इज टैल, व्हॉट इज क्लाइम्बर
वही माय स्कूल, वही ऐस्से, वही माय टीचर
मैम से पूछूँ ऐसा क्यों?
लेकिन लगता है डर
सब गड़बड़ है सब गड़बड़।

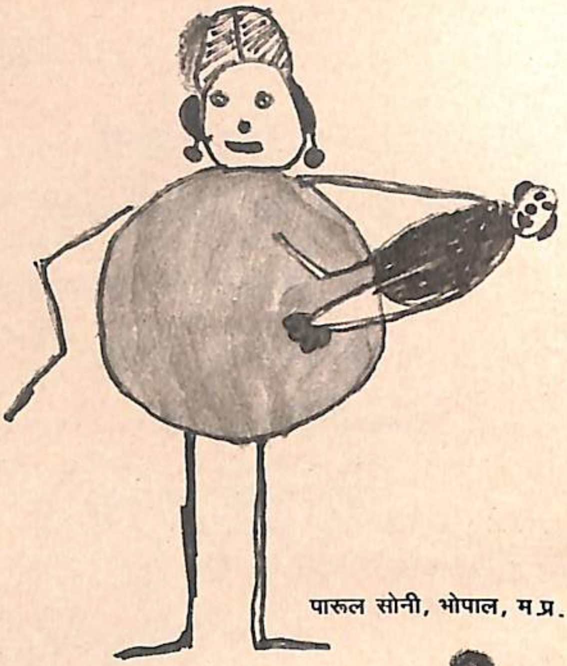


राकेश कुमार श्रीवास्तव, तुरक्या,
मंदसौर, म.प्र.

❑ मुदित वासवानी, तीसरी,
झांसी, उ.प्र.



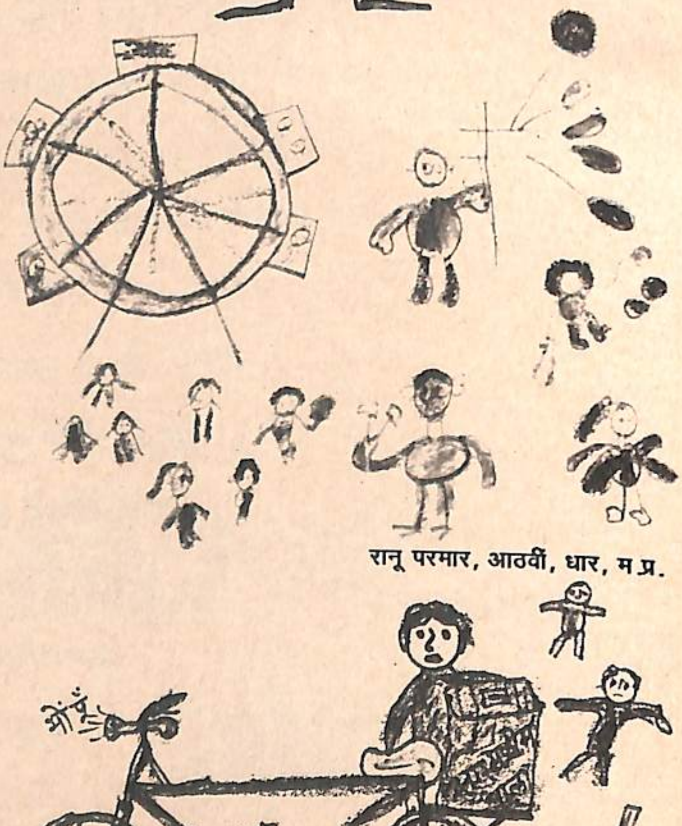
विनोद गौर, आठवीं, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.



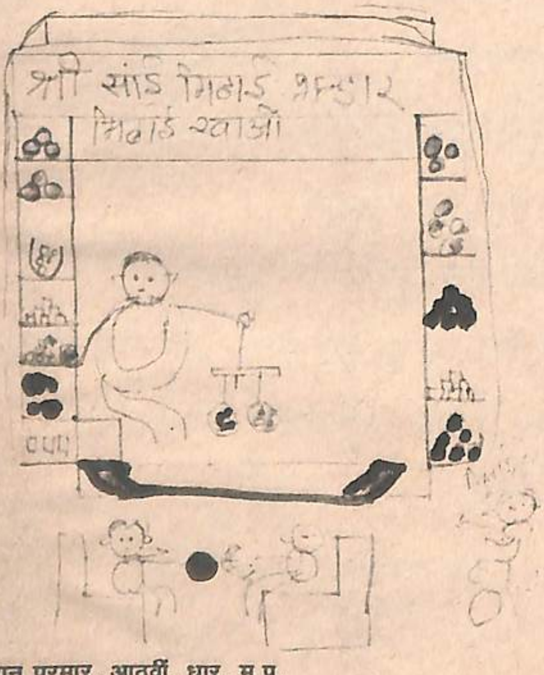
पारूल सोनी, भोपाल, म.प्र.



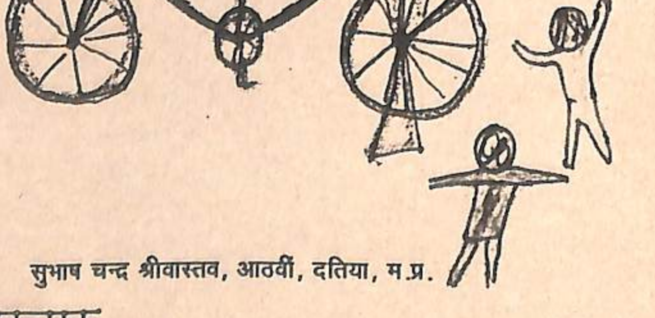
नीरज, चौथी



रानू परमार, आठवीं, धार, म.प्र.

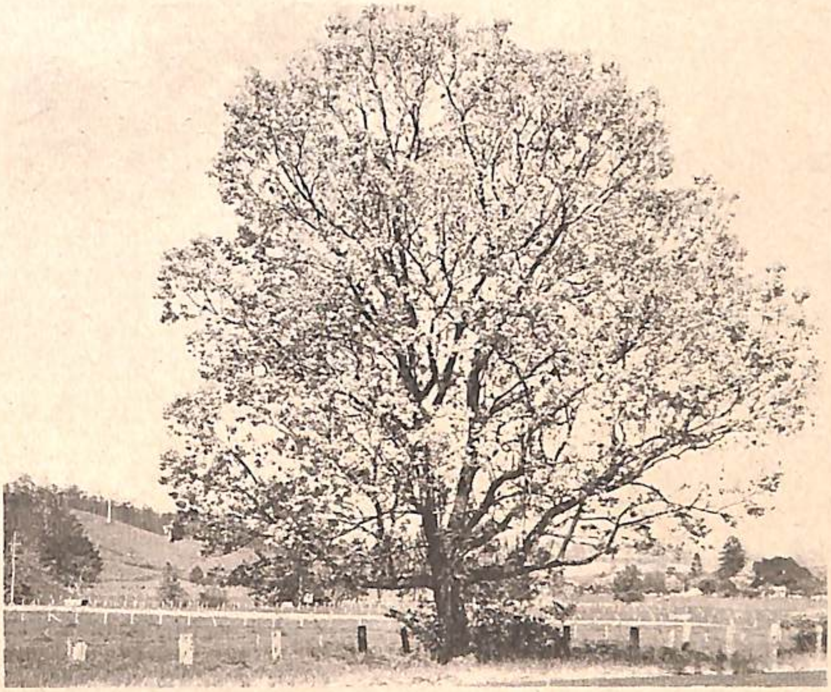


रानू परमार, आठवीं, धार, म.प्र.



सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव, आठवीं, दतिया, म.प्र.

नीला गुलमोहर



नीला गुलमोहर ब्राज़ील का मूल निवासी है। यह बाग बगीचों में सुन्दरता के लिए लगाया जाता है। जब फूलों के खिलने का समय होता है तो इस पेड़ की सुन्दरता देखते ही बनती है। यह मध्यम आकार का फैली हुई शाखाओं वाला पेड़ होता है। हमारे देश में भी यह खूब मिलता है। खास तौर पर दिल्ली, लखनऊ, चण्डीगढ़ और देहरादून में लगा दिखता है।

यह पेड़ फैली हुई शाखों का तो होता ही है साथ ही इसमें संयुक्त पत्तियाँ होती हैं जिसके कारण यह पेड़ और फैला-सा लगता है। फूल खिलने से पहले पेड़ की सारी पत्तियाँ झड़ जाती हैं। ये नीले बैंगनी-से रंग के होते हैं और गुच्छों में खिलते हैं। फूल नली के आकार का लगभग दो इंच लम्बा होता है। मार्च के बीच से लेकर मई तक पेड़ फूलों से भरा रहता है।

इसके फल काग़ज़ की थाली के जैसा होता है। इसमें सख़्त गुठली होती है। शुरु में यह हरे रंग के होते हैं फिर बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। इसमें काग़ज़ के से पंख वाले ढेरों बीज लगते हैं। इसकी लकड़ी कठोर और भारी होती है। लकड़ी के चिकना होने के कारण इसे हत्थे बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। इस पेड़ पर कई तरह के कीड़े रहते हैं। इसकी पत्ती के चूरन का लेप घाव में लगाना लाभकारी माना जाता है।

नया पेड़ बीज या रोपणी तैयार करके लगाया जाता है। वैसे यह बहुत जल्दी बढ़ता है। पाँच वर्ष की आयु में ही फूल आने लगते हैं।

गैस ने बेनिशां किया...

गैस ने बेनिशां[1] किया हमको
ज़ीस्त[2] से बदगुमां[3] किया हमको



रब्त[4] सांसों में अब कहाँ बाक़ी
ज़ोर आहों में अब कहाँ बाक़ी
खून छालों में अब कहाँ बाक़ी
मय प्यालों में अब कहाँ बाक़ी
गैस न बेनिशां किया हमको
ज़ीस्त ने बदगुमां किया हमको

भाई ने भाई को भी कब समझा
कोई चीख़ा कहीं कोई तड़पा
ऐसा मंज़र[5] न आज तक देखा
बस यही हर ज़बां से निकला
गैस ने बेनिशां किया हमको
ज़ीस्त ने बेनिशां कियां हमको



बूढ़े बच्चे जवान भागे थे
सब बचाने को जान भागे थे
होके सब बेतकान[6] भागे थे
कहते ये बेज़बान भागे थे
गैस ने बेनिशां किया हमको
ज़ीस्त से बदगुमां किया हमको

दिल धड़कता है आँख पुरनम[7] है
गैस खाने से नाम में दम है

बस इसी बात का तो मातम है
तेरे अख्तर को बस यही गम है

गैस ने बेनिशां किया हमको
ज़ीस्त से बदगुमां किया हमको

❑ अख्तर शैरी भोपाली

---

1. बेनिशां – जिसका कोई निशान न हो 2. जीस्त –जीवन 3. बदगुमां – विमुख, अप्रसन्न 4. रब्त – लगाव 5. मंजर – दृश्य 6. बेतकान –लगातार 7. पुरनम – नमी से भरी

भयावह गैस त्रासदी के दस साल

दिसम्बर, 1984 की 2-3 तारीख की रात को भोपाल में यूनियन कार्बाइड कम्पनी की कीटनाशक बनाने वाली एक फैक्टरी से मिथाइल आइसो सायनेट नामक ज़हरीली गैस का रिसाव हुआ था। इस गैस ने न केवल हज़ारों लोगों की जान ले ली, बल्कि अन्य कई हज़ारों को ऐसी बीमारियों का शिकार बना दिया, जिससे वे आज भी छुटकारा नहीं पा सके हैं।

इस भयावह त्रासदी को घटे इस दिसम्बर में दस साल पूरे हो गए हैं। लेकिन हादसे का खौफ़ आज भी लोगों के चेहरों पर देखा जा सकता है। उस समय जो बच्चे थे वे अब किशोरवस्था की दहलीज पर हैं। वे भी इस खौफ़ से बचे नहीं हैं। उनमें से कुछ से हमने हादसे के बारे में पूछा। जो कुछ उनके दिल और दिमाग़ पर रह गया है, वह उन्होंने लिखकर दिया। आगे के पन्नों पर हम उनमें से कुछ छाप रहे हैं। साथ में प्रकाशित चित्र भी बच्चों ने बनाए हैं।



फरहाना मसूद, भोपाल, म.प्र.

उस समय जब गैस निकली थी तब हमारी आँखों से आँसू, खाँसी तथा उल्टी वग़ैरह होती थी। अब इतने सालों बाद भी हमारा सिर दुखना, आँखें दर्द करना आदि बहुत-सी बीमारियाँ फैली हुई हैं। आज छोटे-से-छोटे बच्चे को भी चश्मा लगा हुआ है, उसका भी यही कारण है। वह कम्पनी अभी तक चालू है और अपना काम आसानी से कर रही है, यह हमारे शहर के लिए बहुत ही दुख की बात है। मैं अगर मंत्री वग़ैरह होती तो इस कम्पनी को बन्द करवा देती।

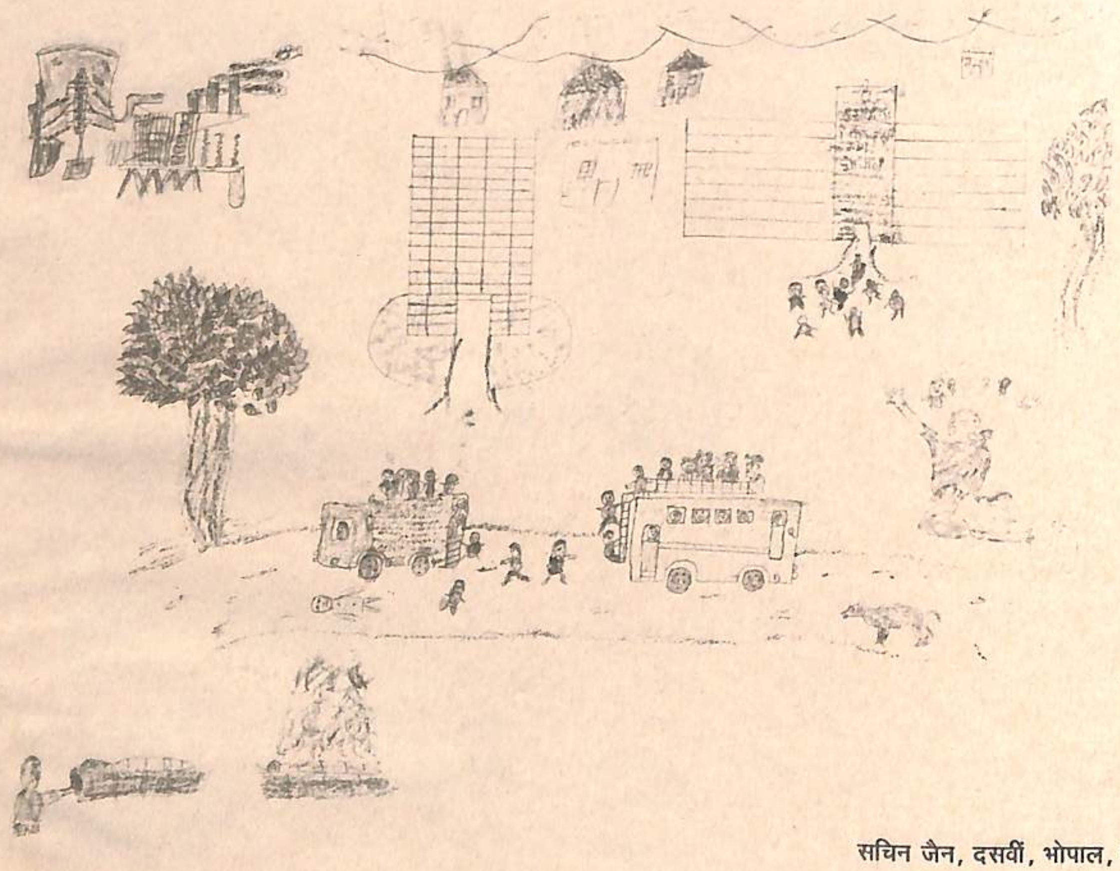
❑ **वीणा शर्मा, गूजरपुरा, भोपाल**

रास्ते में हमने देखा कि सब लोग भाग रहे थे। छोटे-छोटे बच्चे रो रहे थे। बहुत से बच्चे गुम हो गए थे। रास्ते में हम लोगों ने नाली के पानी से भी मुँह धोया। मुझे याद है कि मेरे चाचा ने अपने दो साल के लड़के को छोड़ दिया था, हमारी पड़ोसन ने उसको उठा लिया। हमने एक रात पुल के नीचे गुजारी। जब हम सुबह अपने घर जा रहे थे तो हमें रास्ते में कई लोग मरे पड़े हुए दिखे थे। मैं सोचती हूँ कि ऐसी भयानक घटना किसी दुश्मन के शहर में भी न हो।

❑ **ललिता सैनी, पीरगेट, भोपाल**

हमने क़यामत का वो मन्ज़र देखा जो बड़ों के मुँह से सुना करते थे कि उस दिन कोई किसी का नहीं होगा। हर जगह नफ़सा-नफ़सी का मैदान होगा, न बाप बेटे का होगा न माँ बेटी की, सब अपनी- अपनी जान बचाने के लिए दौड़ेंगे। हमने वही मन्ज़र देखा। एक ऐसी घटना जो मैं आज तक नहीं भुला पाई हूँ, कि एक औरत अपनी बच्ची को छोड़कर खुद ट्रक में चढ़ गई थी और वो बच्ची ज़ोर-ज़ोर से अम्मी अम्मी कहकर चिल्ला रही थी। और एक बच्ची की फ्रॉक ट्रक में हुक में अटक गई थी। वह बच्ची अपनी माँ को बार-बार आवाज़ दे रही थी।

❑ **ग़ज़ाला, चटाईपुरा, भोपाल**



सचिन जैन, दसवीं, भोपाल, म.प्र.

जब हम भोपाल के बाहर जा चुके थे तब हमें मालूम पड़ा कि ज़हरीली गैस निकली थी जिससे यहाँ सब विनाश हुआ था। ऐसा जो हुआ वह कभी नहीं हो। और उसके बाद हम लोग इससे इतना डर गए कि एक माह तक भोपाल लौट कर नहीं आए।

❑ **बृजबिहारी रघुवंशी, शाहजहाँनाबाद, भोपाल**

हमारे दिल में यह सब सोचने से यह सवाल उठता है अगर वो यूनियन कार्बाइड वाला मिल जाए तो उससे यह पूछें कि तुम्हें हमारे ही शहर में यह फैक्ट्री बनाना थी। अपने लाखों-करोड़ों रुपयों के फ़ायदे के पीछे हमारे लाखों-करोड़ों लोगों की ज़िन्दगियों को मोहताज बना दिया।

❑ **मोहम्मद याकूब, काजी कैम्प, भोपाल**

ज़िन्दगी में पहली बार इतनी लाशें देखीं थीं। यह सब देखकर हमको ऐसा लग रहा था जैसे भगवान ने हम सबको सज़ा दी है।

❑ **शबाना बानो, बुधवारा, भोपाल**

मैं उस समय आठ-नौ वर्ष की थी। जब गैस निकली यह हमारे जीवन का पहला हादसा था। कभी न देखा न समझा। दिमाग़ पर एक ख़ौफ़ छाया हुआ था। कुछ समझ न आता था क्या करें, कहाँ जाएँ और अब क्या होगा। भागते समय यह ख़ौफ़ कि घर वापस कैसे जाएँगे। जाएँगे भी कि नहीं, और यह भी नहीं मालूम कि यह हादसा क्या सिर्फ़ भोपाल में है या सारी दुनिया में छाया हुआ एक ख़ौफनाक तूफान है। नन्हा दिमाग़, तरह-तरह के सवाल। एक अजीबोगरीब सोच लिए हुए, भागते हुए। सर्दी का मौका, ठिठुरे हुए हाथ-पाँव। न कोई शाल न गरम कपड़ा। उस समय सिर्फ़ एक ख़ौफ़ और ख़ौफ़।

❑ **फरहाना मसूद, क़ाजी केम्प, भोपाल**

मैंने लोगों को अपनी जान बचाने के लिए दूसरों को पैरों तले कुचलते देखा था। चाहे वो अपने हों या पराए। इससे मैं यह तो नहीं कहना चाहती कि मनुष्य कितना मतलबी होता है। क्योंकि मैं भी मनुष्य हूँ लेकिन मनुष्य का इतना घिनौना रूप मैंने पहली बार देखा था। उस समय मेरी उम्र लगभग छः वर्ष की थी।

❑ **सन्तोष सोनगरा, लखेरापुरा, भोपाल**



शबनम, भोपाल, म.प्र.

जब भोपाल में दो-तीन दिसम्बर 1984 की भयानक रात को यह दुखद घटना हुई थी तब कोई नहीं जानता था कि यह क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है। उस रात को कुछ ही क्षणों में भोपाल जैसी ख़ूबसूरत नगरी एक भय का केन्द्र बनकर रह गई थी।

इतना सब होने के बाद भी यह कम्पनी जिसकी फैक्टरी से गैस का रिसाव हुआ था चालू है। यह हमारे लिए एक बेहद ही चिन्तापूर्ण और शर्मनाक है, कि इतनी जन हानि के बाद भी थोड़े से फ़ायदे के कारण उसे बन्द नहीं करवा पाए।

❑ **प्रभाती माला दुबे, गूजरपुरा, भोपाल**

दस वर्ष पहले की वो भयानक रात याद आते ही हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

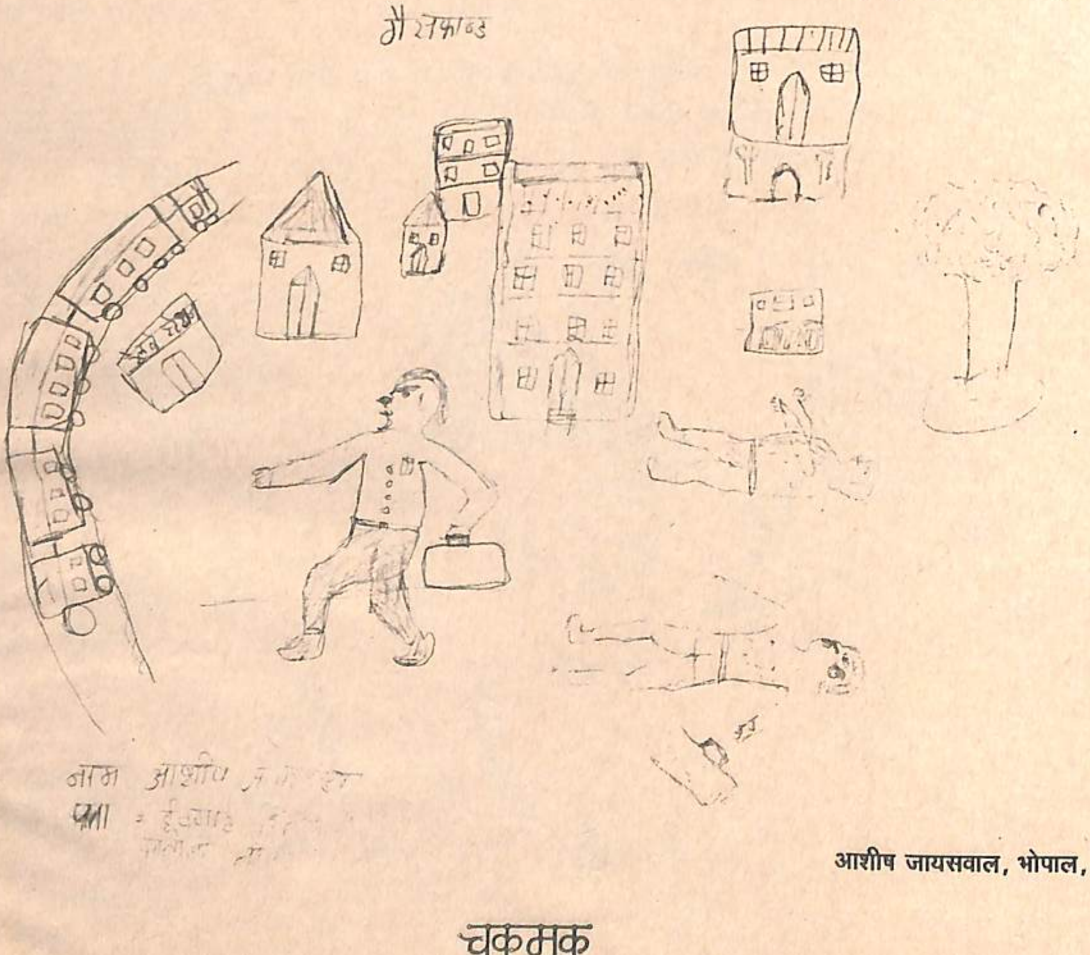
❑ **सचिन कुमार जैन, शाहजहाँनाबाद, भोपाल**

मैं उस समय छः वर्ष की थी पर उस रात का यह कांड मेरे दिमाग़ पर ऐसी छाप छोड़ गया कि मैं उसे कभी नहीं भूल सकती। कितने ही लोगों के चेहरे अपने सगे सम्बन्धियों की मौत से उदास थे। मेरे विचार से ऐसी घटना, इस गैस कांड को होना ही नहीं चाहिए था जिसने हज़ारों लोगों की इहलीला समाप्त कर दी।

❑ **ज़रीना मुश्ताक, इब्राहिमपुरा, भोपाल**

3 दिसम्बर सन् 1984 के दिन भोपाल शहर में एक बहुत भयानक गैस फैली जिससे सारे शहर में भगदड़ मच गई। तब मैं 6 साल की थी। हमारा घर ऊपर की मंजिल पर था और थोड़ा खुला भी था। इसलिए सबको खाँसी चलने लगी। हम लोग घर से बाहर निकले बहुत-से लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे। मेरी मम्मी की गोद में छोटा भाई था। हम पूरा घर खुला छोड़ आए थे। आज जब मैं सोचती हूँ तो यही कि पता नहीं कैसा समय था वह।

❑ **कीर्ति व्यास, फतेहगढ़, भोपाल**



आशीष जायसवाल, भोपाल, म.प्र.

अगर उस रात की याद आज भी की जाए तो याद करने वाले की आँखें बिना नम हुए नहीं रह सकतीं। न जाने कितने लोगों के सुखी संसार, भरे-पूरे परिवार में ज़हर फैल गया। जो चले गए उन्हें याद करके वापस तो बुलाया नहीं जा सकता। मैं उस समय का ज़्यादा नहीं बता सकती क्योंकि मेरी उम्र उस समय छः साल की रही होगी। पर अपने साथी का बिछड़ना मैं नहीं भुला सकती। भोपालवासी आज तक उस ज़हर को अपने ज़हन से नहीं निकाल पाए हैं।

❑ **प्राची सोनी, सर्राफा चौक, भोपाल**

दिसम्बर माह की दो तारीख़ की रात को ऐसा महसूस हुआ जैसे इस शहर में किसी भयानक राक्षस ने प्रवेश किया। जो धीरे-धीरे शहर के लोगों की जानों के साथ खेल रहा था। मौत का तांडव मचा हुआ था। चारों तरफ हाहाकार मचा था। लोग चीख-चिल्ला रहे थे। किसी को कोई होश नहीं था, अपनी जान बचाने के सिवा। किसी को पता न था कौन किस राह पर जा रहा है। भागते - भागते कई लोग वहीं गिरकर मर गए। मैं उस समय बहुत छोटी थी। मुझे नहीं मालूम था कि यह सब क्या हो रहा है।

❑ **निधि सोनी, हवामहल रोड, भोपाल**

हमारे मोहल्ले में सब लोग चले गए थे। सिर्फ़ हम ही अकेले रह गए थे। पूरे मोहल्ले में सन्नाटा छाया हुआ था। फिर अचानक 13-14 तारीख़ को गैस की टंकी में बची गैस ख़ाली करवाने के लिए शहर को ख़ाली करवाया गया। हम भी अपने मामाजी के यहाँ विदिशा चले गए थे। तीन - चार दिन बाद वापस आए।

❑ **आनन्द कुमार, नूरमहल रोड, भोपाल**

मैं उस समय 5 या 6 वर्ष का रहा होऊँगा। मुझे जहाँ तक याद है, उस रात चारों तरफ चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं। हमारे घर के सभी सदस्य आवाज़ सुनकर जाग चुके थे। उस समय किसी को किसी चीज़ की परवाह नहीं थी। आँखों में जलन मच रही थी। खाँसी आ रही थी। हम भागकर कई किलोमीटर दूर शुजालपुर पहुँचे।

❑ **शैलेन्द्र जैन, हवामहल, भोपाल**

2 दिसम्बर की काली भयानक रात। यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री में से मिथाइल आइसो सायनेट गैस रिसने लगी थी, लेकिन इस बात से बेख़बर लोग अपने - अपने घरों में चैन की नींद सो रहे थे। जब गैस बहुत अधिक मात्रा में फैल गई तो कई लोगों की उस गैस की वजह से मृत्यु हो गई।

❑ **दिलीप सिंह कुशवाह, निशातपुरा, भोपाल**

माथापच्ची : हल नवम्बर 94 अंक के

1. फेंकू के पास 60 गाय हैं।
2. दो टुकड़ों में।
3. 5° का कोण 5° का ही दिखेगा।
5. ट्रेक्टर के अगले पहिये जल्दी घिस जाते हैं। जब तक पिछले पहिए एक बार घूमें आगे के छोटे पहिए ढाई-तीन चक्कर पूरा कर चुके होते हैं।
6. पहले तीन कट तोत्तोचान ने बेधड़क लगाए और आगे बढ़ती गई। पर आख़िरी तीन कटों के साथ उसे थोड़ा दिमाग़ भी लगाना पड़ा। हर बार कट लगाकर तार का घुमावदार पेंच खोलने से ही रास्ता खुल जाता था।

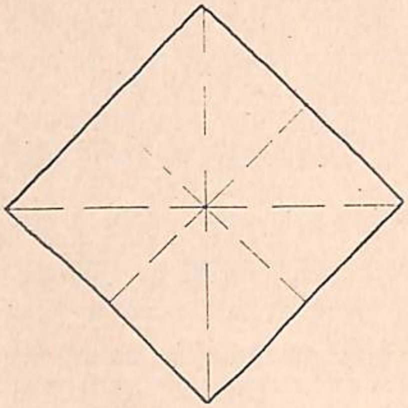
वर्ग पहेली-39 : हल



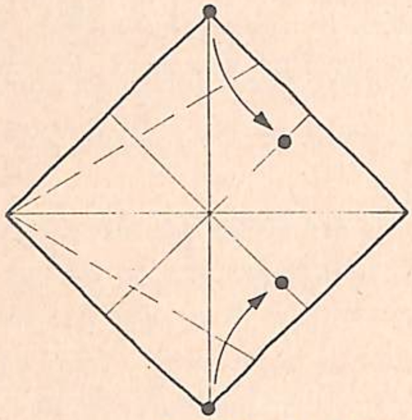
वर्ग पहेली-39 का केवल एक सर्वशुद्ध हल प्राप्त हुआ है। इसे भेजा है- अवनीश दुबे, कटनी ने। इन्हें चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी।

खेल कागज़ का

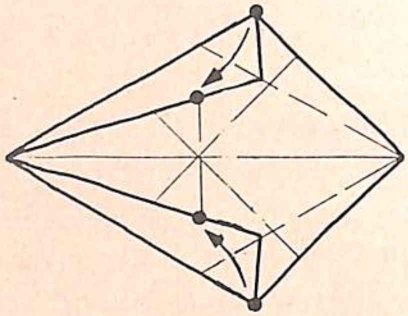
सितारा



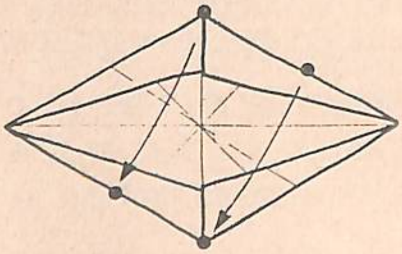
1. एक वर्गाकार कागज़ लो। उसमें इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से एक-एक करके मोड़ बनाओ और मोड़ पक्के करके वापस खोल लो।



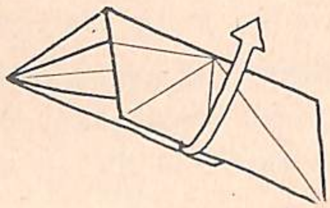
2. अब इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



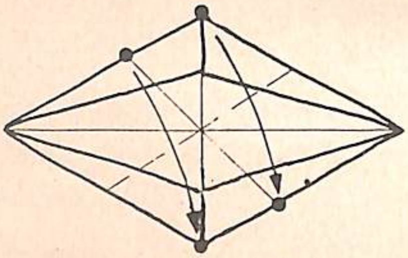
3. इस तरह। अब फिर दाईं ओर भी टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



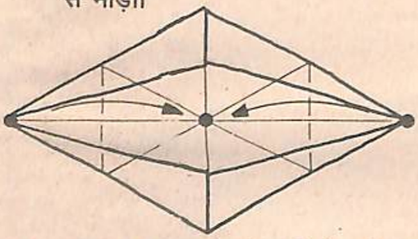
4. ऐसी आकृति बन जाएगी। अब इस चित्र में दिखाए ऊपरी किनारे के बिन्दुओं को नीचे के किनारे के बिन्दुओं पर मिलाना है। बीच में एक टूटी रेखा भी तुम्हें दिखाई दे रही है, उसी पर से मोड़ो।



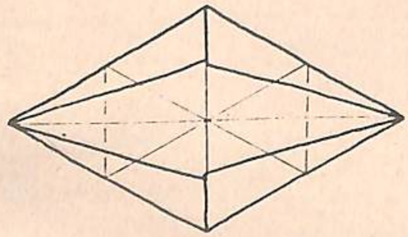
5. इस तरह। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।



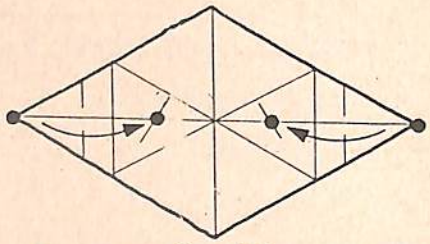
6. अब इसी तरह बाईं ओर के ऊपर के बिन्दुओं को नीचे के बिन्दुओं से मिलाओ। बीच में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ो। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।



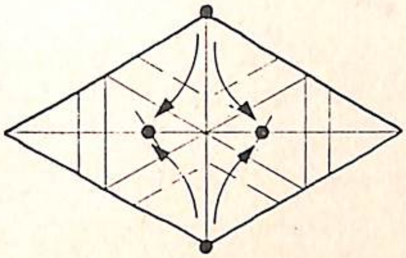
7. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। पहले दाईं ओर के सिरे को मोड़ कर बीच के बिन्दु तक ले जाकर, मोड़ पक्का करके वापस खोल लो। फिर उसी तरह बाईं ओर के सिरे को मोड़ो।



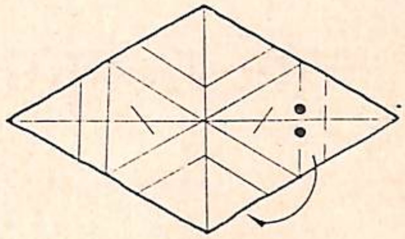
8. तुम्हारे पास इस तरह की आकृति है। उसमें इस तरह के मोड़ के निशान भी बन गए हैं। अब इसे पलट लो।



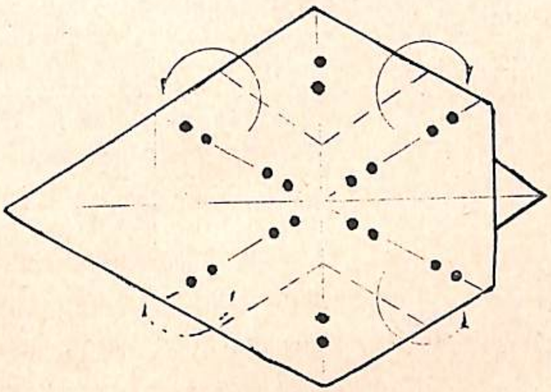
9. अब इस चित्र में दिखाए अनुसार दाएँ और बाएँ दोनों सिरों को बीच की रेखा पर बने बिन्दु तक लाकर मिलाओ। मोड़ पक्के करके वापस खोल लो।



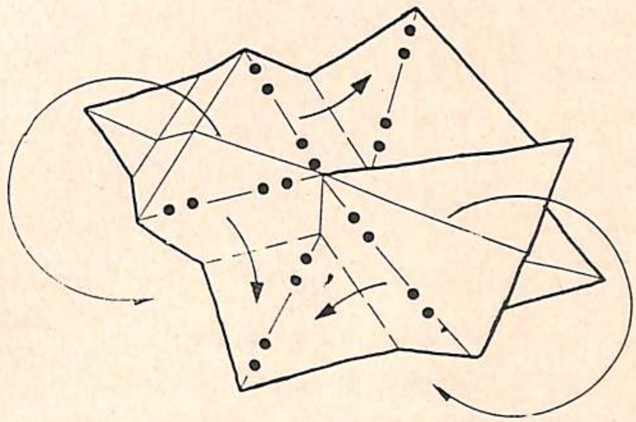
10. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाना है। इसके लिए ऐसा करो कि पहले बीच की रेखा पर बीच से बराबर दूरी पर दो बिन्दु बना लो। फिर ऊपर के बिन्दु को तीर की दिशा में बीच के दाहिने बिन्दु पर मिलाकर मोड़ बनाओ। फिर उसी ऊपर के बिन्दु को बाईं ओर के बिन्दु पर मिला कर मोड़ बनाओ। इसी तरह नीचे के बिन्दु को बीच की रेखा पर बने बिन्दुओं पर मिलाकर मोड़ बना लो। चारों बार इतना ही मोड़ना जितनी टूटी रेखाएँ दिख रही हैं।



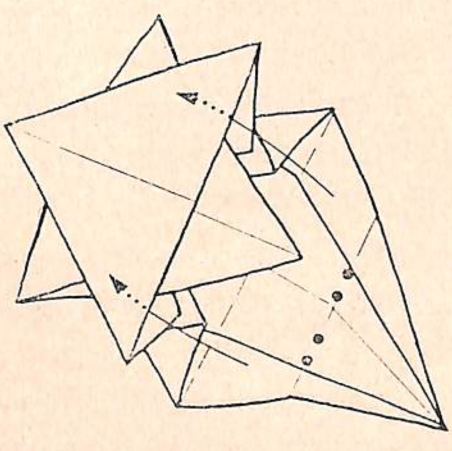
11. अब तुम्हारे पास वाले काग़ज़ में भी इस तरह के निशान बन गए होंगे। अब बस बनाए हुए निशानों पर से मोड़ना बाक़ी है। कैसे, आगे देखो।



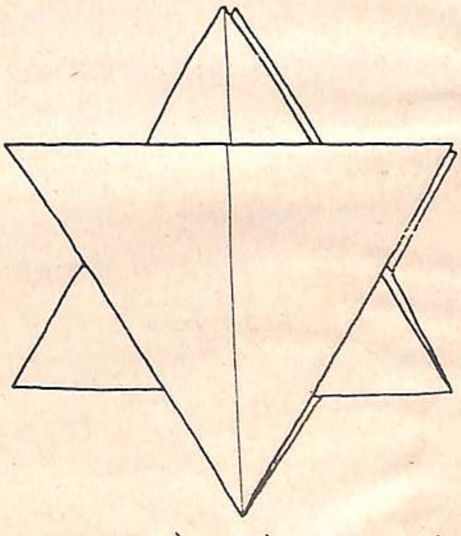
12. इस चित्र में दिखाए अनुसार मोड़ो। जहाँ टूटी रेखा दिखाई दे रही है उस जगह पर से कागज को मोड़ो। इस तरह कि जहाँ बिन्दु और रेखा वाली रेखाएँ हैं उसकी वो जगह भी मुड़कर बाहर की ओर निकल आए।



13. देखो, इस तरह। कुछ तो चित्र देखकर समझो, कुछ अपना दिमाग़ लड़ाओ।



14. यह देखो इस तरह। दोनों ओर के सिरों पर जो मोड़ बनाए थे उन्हें मोड़ो।



15. हुआ कुछ। अगर हो गया तो बन भी गया होगा छः कोनों वाला सितारा।

नन्हीं राजकुमारी और चन्द्रमा

❑ जेम्ज़ थर्बर



एक बार की बात है समुद्र किनारे के एक राज्य में लैनोर नाम की एक नन्हीं राजकुमारी रहती थी। एक दिन लैनोर ने रसभरी की इतनी चटनी खा ली कि वह बीमार हो गई।

शाही डाक्टर उसे देखने आया। उसने राजकुमारी लैनोर की नब्ज देखी, बुखार देखा और उससे कहा कि अपनी जीभ बाहर निकालकर दिखाए। शाही डाक्टर चिन्ता में पड़ गया। उसने लैनोर के पिता को बुलाया। राजा अपनी बेटी को देखने के लिए आया।

"तुम्हें जो चाहिए बोलो," राजा ने अपनी बेटी से कहा, "बताओ किस चीज के लिए तुम्हारा मन हो रहा है?"

"हाँ," राजकुमारी बोली, "अगर मुझे चन्द्रमा मिल जाए तो मैं अच्छी हो जाऊँगी।"

राजा के पास बहुत विद्वान थे। वह उनसे जो कुछ माँगता, वे हाजिर कर देते थे। इसलिए राजा ने अपनी बेटी से कहा कि उसे चाँद मिल जाएगा।

वह अपने सिंहासन वाले कमरे में गया और तीन लम्बे और एक छोटा झटका देकर उसने घण्टी वाली रस्सी को खींचा। मुख्य वजीर फौरन हाजिर हो गया।

मुख्य वजीर बहुत भारी भरकम आदमी था। उसने इतना मोटा चश्मा पहन रखा था कि उसकी आँखें दुगनी बड़ी लग रही थीं। इस वजह से जितना बुद्धिमान वह था, उससे दुगना दिखाई दे रहा था।

"मैं चाहता हूँ कि तुम चन्द्रमा लेकर आओ," राजा बोला, "राजकुमारी लैनोर को चन्द्रमा चाहिए, तभी वह अच्छी हो पाएगी।"

"चन्द्रमा?" मुख्य वजीर चौंका उसकी आँखें और बड़ी हो गईं। अब वह जितना बुद्धिमान था उससे चौगुना लगने लगा।

"हाँ, हाँ चन्द्रमा," राजा ने कहा, "च- न् - द्र - मा, चन्द्रमा। आज रात या ज़्यादा से ज़्यादा कल सुबह तक चाहिए।"

मुख्य वजीर ने रूमाल से माथे का पसीना पोंछा और इसके बाद बड़े जोर से नाक सिनकी। "मैंने आज तक आपके लिए बहुत चीज़ें जुटाई हैं महाराज," वजीर बोला। "इत्तफाक से मेरे पास उन सभी चीजों की सूची मौजूद है जो मैंने आपके लिए जमा की हैं।" उसने अपनी जेब से लम्बा चर्मपत्र निकाला। "जरा देखूँ।" उसने माथा सिकोड़ कर पढ़ना शुरू किया, "मैं अब तक ला चुका हूँ,- हाथी दाँत, लंगूर, मोर, मानिक, दूधिया, पन्ना, गुलाबी हाथी, नीले कुत्ते, सुनहरे कीड़े, तुणमणि की बनी मक्खियाँ, गाने वाली चिड़ियों की जीभें, फरिश्तों के पंख, यूनिकार्न के सींग, बौने राक्षस, मत्स्य कन्याएँ, लोबान, अम्बर, गन्धरस, चारण, नर्तकियाँ, एक पाव मक्खन, दो दर्ज़न अण्डे और एक बोरा शक्कर- मुआफ कीजिए यह तो मेरी पत्नी ने यहाँ लिख दिया है।"

"मुझे नीले कुत्ते तो याद नहीं हैं।" राजा ने कहा।

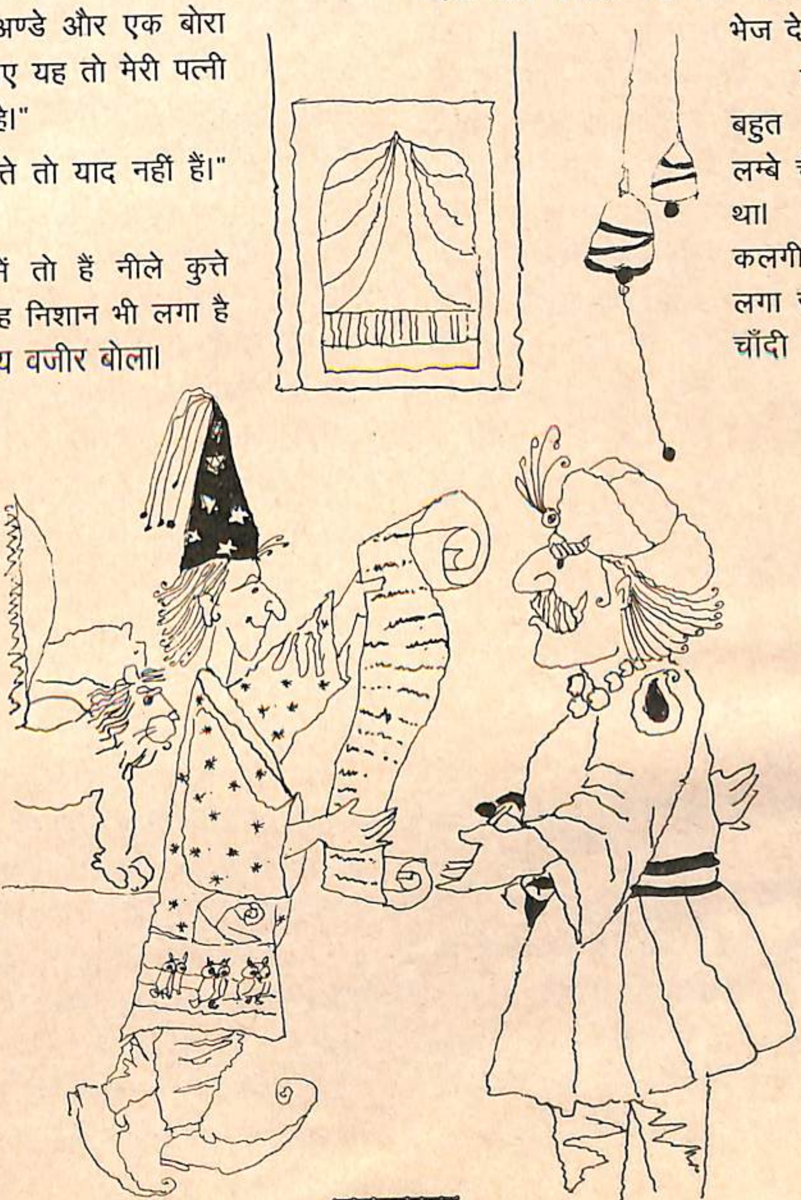
"नहीं सूची में तो हैं नीले कुत्ते और उनके ऊपर यह निशान भी लगा है कि वे आए हैं," मुख्य वजीर बोला।

"छोड़ो नीले कुत्तों की बात," राजा ने कहा, "इस समय तो मुझे चन्द्रमा की ज़रूरत है।"

"मैंने समरकन्द, अरब और ज़न्ज़ीबार से आपके लिए चीजें मँगाई हैं महाराज," मुख्य वज़ीर बोला, "लेकिन चन्द्रमा ला सकने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। चन्द्रमा 35,000 मील दूर है और राजकुमारी के कमरे से बड़ा है। अलावा इसके वह पिघले तांबे का बना हुआ है। नहीं महाराज, मैं आपके लिए चन्द्रमा नहीं ला सकता। नीले कुत्ते बेशक, लेकिन चाँद तो बिल्कुल नहीं।"

राजा को मुख्य वजीर की बात सुनकर बहुत गुस्सा आया। उसने वजीर को कमरे से निकाल दिया और उससे कहा कि वह शाही जादूगर को भेज दे।

शाही जादूगर बहुत छोटा दुबला-सा, लम्बे चेहरे वाला आदमी था। उसने एक कलगीदार लाल टोप लगा रखा था जिस पर चाँदी के सितारे थे।



उसने लम्बा नीला लबादा भी पहना हुआ था जिस पर सोने के उल्लू बने हुए थे। लेकिन जब राजा ने उससे चन्द्रमा की फ़रमाइश की तो उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"महाराज आज तक मैंने बेशुमार कमाल आपको दिखाए हैं," शाही जादूगर बोला। "इत्तफ़ाक से मेरी जेब में उन जादुओं की सूची है जो मैंने अब तक पेश किए हैं।" उसने अपने लबादे की गहरी जेब से एक कागज निकाला, "यह यूँ शुरू होता है। 'प्रिय जादूगर मैं तुम्हें यह दार्शनिक, पत्थर लौटा रहा हूँ जिसके बारे में तुम्हारा दावा था..........नहीं यह नहीं है।" शाही जादूगर ने अपनी जेब से लिपटा हुआ चर्मपत्र निकाला और पढ़ना शुरू किया। "यह रहा - देखें, इसमें क्या-क्या है। आपके लिए शलजमों में से खून और खून में से शलजम निकाले हैं, मैंने रेशम के टोपों में से खरगोश और खरगोशों में से रेशम के टोप निकाले हैं। मैंने 'कहीं नहीं' से फूल, डफलियाँ और फ़ाख्ताएँ पैदा की हैं और फूलों, डफलियों और फ़ाख्ताओं से 'कहीं-नहीं' को जन्म दिया है। मैंने आपको भविष्यवाणी करने वाली और जादुई घड़ियाँ लाकर दी हैं और स्फटिक के ग्लोब जुटाए हैं जिसमें आप आने वाले समय को देख सकते हैं। मैंने अफरे हुए पेट, टूटे हुए दिल और कानों में घण्टियों के लिए काढ़े और उबटनें तैयार की हैं। मैंने आपके लिए मोहरी, रात के साये, और बाज़ के आँसुओं से बने हुए ऐसे खास घोल तैयार किए हैं जिनसे चुड़ैलों, पिशाचों और रात में टकराने वाली अन्य चीजों से बचा जा सकता है। मैंने आपको सात मील के जूते, सुनहरी छुअन और अदृश्यता का लबादा भी भेंट किया है।"

"न, यह लबादा तो किसी काम का नहीं था," राजा ने कहा।

"काम का तो था," जादूगर बोला।

"नहीं, बिल्कुल नहीं," राजा ने जवाब दिया, "मैं बार-बार चीजों से टकराता था।"

"लबादे का काम था आपको अदृश्य बनाना, न कि आपको चीजों से टकराने से बचाना," जादूगर ने सफाई दी।

"मुझे तो बस इतना मालूम है कि मैं लगातार चीजों के टकराता जा रहा था," राजा ने कहा।

शाही जादूगर ने फिर लम्बे चर्मपत्र से पढ़ा, "बौनादेश से सींग, रेतमानुष से रेत और इन्द्रधनुष से सोना तक मैं आपके लिए लाया हूँ। अलावा इसके एक पत्ता सिलाई की सुइयाँ, मोम - ओहो, मुआफ कीजिए यह सूची तो मेरी पत्नी की है।"

"मैं जो अब चाहता हूँ, वह है चन्द्रमा। राजकुमारी लैनोर को चन्द्रमा चाहिए नहीं तो वह ठीक नहीं हो पाएगी," राजा ने कहा।

"चन्द्रमा तो कोई नहीं ला सकता। एक तो चाँद 150,000 मील दूर है, और हरे पनीर का बना हुआ है, और फिर वह इस महल से कम से कम दुगना बड़ा है," जादूगर बोला।

राजा फिर आग बबूला हो उठा और उसने शाही जादूगर को उसकी गुफा में वापिस भेज दिया। इसके बाद राजा ने शाही गणितज्ञ को बुला भेजा।

शाही गणितज्ञ गंजा था और उसकी नजदीक की नजर बहुत कमजोर थी। उसके सिर पर टोपी थी और दोनों कानों के पीछे एक-एक पेन्सिल लगी हुई थी। उसने काला सूट पहन रखा था जिस पर सफेद अंक लिखे हुए थे।

राजा ने छूटते ही गणितज्ञ से कहा, "मुझे उन समस्याओं की सूची नहीं सुननी है जो 1907 से लेकर अब तक तुमने मेरे लिए हल की हैं। मुझे तो अपनी बेटी के लिए चन्द्रमा चाहिए और तुम्हें इसका जुगाड़ करना है। राजकुमारी लैनोर को चाँद मिलेगा, तभी वह ठीक हो पाएगी।"

"मुझे खुशी है आपने उन समस्याओं का ज़िक्र तो किया जो 1907 से लेकर अब तक मैंने आपके लिए हल की हैं," शाही गणितज्ञ ने कहा। "इत्तफाक से मेरे पास उन सबकी सूची है।"

उसने एक लिपटा हुआ लम्बा चर्मपत्र निकालकर उस पर नजर दौड़ाई, "देखें इसमें क्या-क्या है। मैंने असमंजस के दो सींगों के बीच, रात और दिन के बीच, क और ह के बीच के अन्तर आपको बताए हैं। मैंने अनुमान लगाकर

बताया है ऊँचाई कितनी ऊँची है और सुदूर पहुँचने के लिए क्या समय लगता है और 'चले गए' का अन्जाम क्या होता है। मैंने समुद्री अजगर की लम्बाई नापी है, अमूल्य वस्तुओं का मूल्य आँका है, दरियाई घोड़े का वर्ग निकाला है। मैंने बताया है कि जब आप न तीन में होते हैं, न तेरह में तो उस समय दरअसल आप कहाँ होते हैं। आपके पास कितनी मात्रा में 'है' मौजूद है कि उसे "हैं" में बदला जा सके। समुद्री नमक से आप कितनी चिड़िया पकड़ सकते हैं- 18,77,96,132- अगर आपको जानने में रूचि हो।"

"इतनी चिड़ियाँ तो पृथ्वी पर हैं ही नही," राजा ने कहा।

"मैंने यह नहीं कहा कि हैं, मैंने यह बताया कि अगर होतीं तो।"

"मुझे अठ्ठारह करोड़ काल्पनिक चिड़ियों के बारे तुमसे कुछ नहीं सुनना," राजा बोला, "मुझे राजकुमारी के लिए चन्द्रमा चाहिए।"

"चन्द्रमा तो 300,000 मील दूर है," शाही गणितज्ञ ने कहा," वह सिक्के की तरह गोल और चपटा है, केवल वह ऐस्बेस्टस का बना हुआ है और इस राज्य से आधे आकार का है। अलावा इसके, वह आसमान में चिपका हुआ है। चन्द्रमा को कोई नहीं ला सकता।"

राजा इस बार भी गुस्से में लाल-पीला हो गया। फिर उसने शाही विदूषक को बुलाने के लिए घण्टी बजाई। विदूषक छलाँगें मारता हुआ सिंहासन कक्ष में आया - अति रंगीन वस्त्रों, टोपी और घण्टियों के साथ और आकर सिंहासन के पास बैठ गया।

"कहिए, महाराज, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" शाही विदूषक ने पूछा।

"मेरे लिए कोई कुछ नहीं कर सकता," राजा बड़े अफसोस से बोला। "राजकुमारी लैनोर को चन्द्रमा चाहिए और वह तब तक ठीक नहीं होगी जब तक उसे चाँद मिल नहीं जाता। तुम मेरे लिए वीणा पर कोई उदास धुन छेड़ो।"

"विद्वान लोगों के मुताबिक- चाँद कितना बड़ा और कितनी दूर है?" विदूषक ने पूछा।

"मुख्य वजीर कहता है कि चन्द्रमा 35,000 मील दूर है और राजकुमारी के कमरे से बड़ा है। शाही जादूगर का कहना है वह 150,000 मील दूर है और इस महल से दुगना बड़ा है। शाही गणितज्ञ सोचता है कि चन्द्रमा 300,000 मील दूर है और इस राज्य से आधा है," राजा ने बताया।

शाही विदूषक ने कुछ देर वीणा को छेड़ा। "वे सभी बुद्धिमान लोग हैं," उसने कहा, "इसलिए वे ठीक ही कहते होंगे। अगर वे सभी सही हैं तो चन्द्रमा



सचमुच उतना ही बड़ा और उतनी ही दूर होगा जितना कि वे सब कहते हैं। अब करना यह चाहिए कि राजकुमारी लैनोर से पूछें कि चाँद कितना बड़ा है और कितनी दूर है।"

"अरे, यह ख्याल तो मुझे आया ही नहीं," राजा ने कहा।

"मैं उससे जाकर पूछता हूँ, महाराज," विदूषक ने कहा। और वह चुपके से राजकुमारी के कमरे में पहुँचा।

राजकुमारी जाग रही थी और वह विदूषक को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। लेकिन उसका चेहरा पीला था और आवाज बहुत कमज़ोर थी।

"क्या तुम मेरे लिए चन्द्रमा लाए हो?" उसने पूछा।

"अभी नहीं," विदूषक ने उत्तर दिया, "पर मैं तुरन्त लाऊँगा। तुम बताओ कि चाँद कितना बड़ा है?"

"मेरे अँगूठे के नाखून से ज़रा छोटा है," राजकुमारी ने कहा, "क्योंकि जब मैं अँगूठा उठा कर चाँद के सामने करती हूँ तो चाँद छिप जाता है।"

"और चाँद कितनी दूर है," विदूषक ने फिर पूछा।

"मेरी खिड़की के बाहर जो पेड़ है, उससे ऊँचा तो वह नहीं है," राजकुमारी ने बताया, "क्योंकि कभी कभी वह पेड़ की टहनियों में उलझ जाता है।"

"तुम्हारे लिए चाँद लाना बहुत आसान काम है," विदूषक बोला। "आज रात जब चाँद ऊपर की टहनियों में उलझेगा तो मैं पेड़ पर चढ़ कर उसे उतार लूँगा।" विदूषक ने कहा।

फिर उसने कुछ और सोचा, "अच्छा यह बताओ कि चन्द्रमा किस चीज का बना हुआ है?"

"ओह," राजकुमारी बोली, "वह तो सोने का बना है - तुम इतना भी नहीं जानते।"

शाही विदूषक राजकुमारी के कमरे से निकलकर सीधे शाही सुनार के पास गया। उसने सुनार से छोटा-सा सोने का चाँद बनवा लिया जो राजकुमारी के अंगूठे के नाखून से जरा-सा छोटा था। फिर उसे एक सोने की डोरी में पिरोकर, राजकुमारी के लिए रख लिया।

"मैंने यह क्या बनाया है?" शाही सुनार ने पूछा

"तुमने चन्द्रमा बनाया है," विदूषक ने उसे



बताया।

"लेकिन चाँद तो 500,000 मील दूर है और काँसे का बना हुआ है और कँचे की तरह गोल है," शाही सुनार बोला।

"ऐसा तुम सोचते हो," शाही विदूषक ने चलते-चलते कहा।

चन्द्रमा लेकर शाही विदूषक राजकुमारी लैनोर के पास पहुँचा। वह एकदम प्रसन्न हो गई। अगली सुबह वह उठकर बाग में खेलने लगी। लेकिन राजा की चिन्ताएँ अभी दूर नहीं हुई थीं, उसे मालूम था कि रात को चाँद आसमान में निकलेगा और वह नहीं चाहता था कि राजकुमारी उसे देखे। अगर राजकुमारी चन्द्रमा को देख लेगी तो उसे पता चल जाएगा कि जो चाँद उसने गले में पहना है वह नकली है।

इसलिए राजा ने मुख्य वज़ीर को बुला भेजा और उससे कहा, "हमें किसी भी कीमत पर राजकुमारी लैनोर को आज की रात आसमान में चन्द्रमा देखने से रोकना होगा।"

मुख्य वज़ीर ने अपने माथे पर दस्तक देते हुए बहुत सोचकर कहा, "मुझे तो केवल एक उपाय सूझता है। हमें राजकुमारी को गहरा काला चश्मा पहना देना चाहिए ताकि उसे कुछ भी दिखाई न दे। तब वह आसमान में चमकते हुए चन्द्रमा को नहीं देख पाएगी।"

इस बात पर राजा को बहुत गुस्सा आया और उसने अपने सिर को बाएँ से दाएँ हिलाया। "अगर वह काला चश्मा पहनेगी तो चीज़ों से टकराएगी," राजा बोला, "ऐसे तो वह फिर बीमार पड़ जाएगी।" राजा ने वज़ीर को भेज दिया और शाही जादूगर को बुलाया।

"हमें चन्द्रमा को छिपाना होगा," राजा ने जादूगर से कहा, "ताकि राजकुमारी लैनोर उसे आज रात आसमान में न देख पाए। बोलो हम चन्द्रमा को कैसे छिपा सकते हैं?"

शाही जादूगर पहले तो अपने हाथों के बल फिर सिर के बल और फिर अपने पैरों पर वापिस खड़ा हुआ। "मुझे मालूम है हम क्या कर सकते हैं," उसने कहा। "हम खम्भों के सहारे महल के बगीचों के चारों ओर काले मखमल के ऊँचे पर्दे तान देंगे। राजकुमारी लैनोर उन परदों के पार देख नहीं पाएगी और इस तरह चन्द्रमा भी छिप जाएगा।"

राजा इस बात पर और भी क्रुद्ध हुआ और अपनी बाहें ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगा। "मखमल के काले पर्दे तो हवा तक को रोक लेंगे। राजकुमारी लैनोर का दम घुटेगा और वह फिर से बीमार पड़ जाएगी।" राजा ने शाही जादूगर को भेज कर शाही गणितज्ञ को बुला भेजा।

"हमें कुछ करना होगा," राजा ने कहा, "ताकि आज की रात जब आसमान में चाँद निकले तो राजकुमारी लैनोर उसे देख न पाए। तुम तो इतना कुछ जानते हो, इस समस्या का भी हल निकालो।"



शाही गणितज्ञ पहले गोल- गोल और उसके बाद चौकोर घूमकर स्थिर हो गया। "हो गया! हो गया!" वह बोला। "हम हर रात बगीचों में आतिशबाज़ी चला सकते हैं। हम चाँदी के फव्वारे और सोने के झरने जैसी आतिशबाज़ी चलाएँगे जिनके चलने से आसमान चिनगारियों से इतना भर जाएगा कि दिन के उजाले

जैसा दिखाई देगा। इस तरह राजकुमारी लैनोर चन्द्रमा नहीं देख पाएगी।"

इस बात पर राजा को इतने ज़ोरों का गुस्सा आया कि वह ऊपर-नीचे कूदने लगा। "आतिशबाज़ी से राजकुमारी लैनोर सो नहीं पाएगी। अगर उसकी नींद पूरी नहीं हुई, तो वह फिर से बीमार पड़ जाएगी।" राजा ने शाही गणितज्ञ को भी भेज दिया।

जब राजा ने आसमान में देखा तो अंधेरा हो चुका था। चाँद की एक कतरन ने झाँकना शुरू कर दिया था। राजा डर के मारे उछल पड़ा और उसने विदूषक के लिए घण्टी बजाई। विदूषक छलाँग लगाता हुआ सिंहासन कक्ष में आया और सिंहासन के पास बैठ गया।



"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ, महाराज?" उसने पूछा।

"मेरे लिए कोई कुछ नहीं कर सकता," राजा बहुत दुखी होकर बोला, "चन्द्रमा फिर से निकल रहा है। वह राजकुमारी लैनोर के कमरे में भी झाँकेगा। और उसे पता चल जाएगा कि चाँद आसमान में है न कि उसके गले में। बस तुम मेरे लिए वीणा पर कोई उदास धुन छेड़ो, बहुत बहुत उदास, क्योंकि जैसे ही राजकुमारी चाँद को देखेगी, वह बीमार हो जाएगी।"

विदूषक ने धीरे-धीरे तारों को छेड़ना शुरू किया। "आपके विद्वान क्या कहते हैं ?" उसने पूछा।

"उन्हें कोई ऐसा उपाय नहीं सूझ रहा जिससे राजकुमारी लैनोर दोबारा बीमार नहीं पड़ेगी।" राजा ने कहा।

विदूषक ने एक और गीत बजाया, बहुत धीमे सुरों में। "आपके विद्वान तो सब कुछ जानते हैं," उसने कहा, "और अगर वे चाँद को नहीं छिपा सकते तो इसका मतलब है कि वह छिप ही नहीं सकता।"

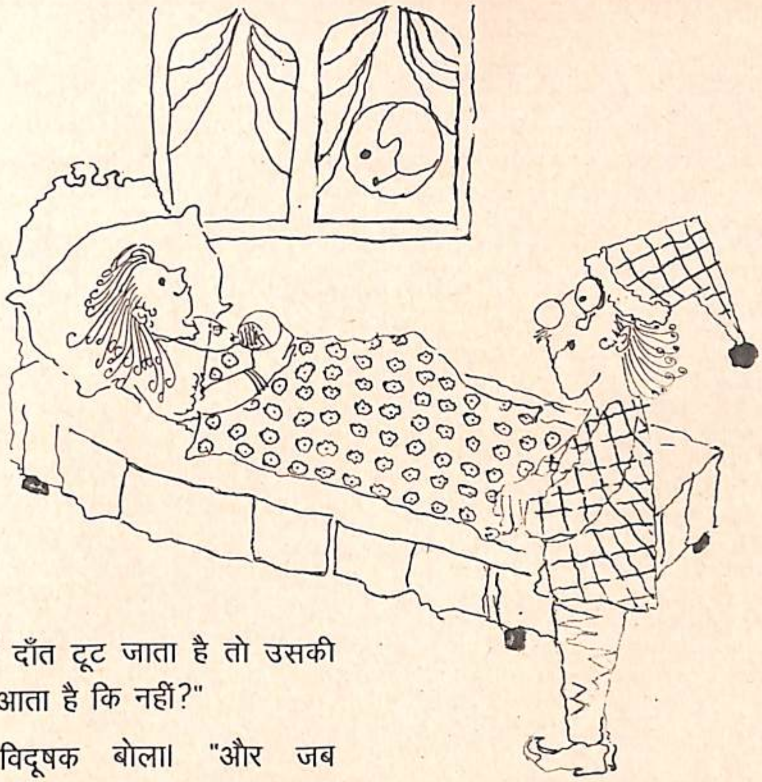
राजा ने अपना चेहरा हाथों से ढाँप लिया और एक ठंडी साँस भरी। अचानक उसने सिंहासन से उछलकर खिड़की की ओर इशारा किया, "देखो," वह चिल्लाया। "चन्द्रमा इस समय राजकुमारी लैनोर की खिड़की में चमक रहा है। कौन समझाए कि यह कैसे हो सकता है कि चन्द्रमा आसमान में भी चमक रहा है और उसके गले में भी सोने की ज़ंजीर के सहारे लटक रहा है?"

विदूषक ने वीणा से हाथ उठा लिए। "यह किसने समझाया कि चाँद का कैसे लाया जाए जबकि आपके विद्वानों को मानना था कि वह बहुत बड़ा है और बहुत दूर है? राजकुमारी लैनोर ने। इसलिए राजकुमारी लैनोर आपके विद्वानों से ज़्यादा बुद्धिमान है और चन्द्रमा के बारे उनसे बेहतर जानती है। इसलिए मैं उसी से पूछूँगा।" और इससे पहले कि राजा उसे रोक पाता, विदूषक चुपके से सिंहासन कक्ष में से निकलकर संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ राजकुमारी लैनोर के कमरे में जा पहुँचा।

राजकुमारी बिस्तर पर लेटी हुई थी। लेकिन पूरी तरह जागी हुई थी। वह खिड़की में चमकते चन्द्रमा को देख रही थी। उसके हाथ में उसका चाँद था जो विदूषक बनवाकर लाया था। विदूषक बहुत उदास था और उसकी आँखें भीग रही थीं।

"बोलो, राजकुमारी लैनोर," वह उदासी से बोला, "भला यह कैसे हो सकता है कि चन्द्रमा आसमान में भी चमक रहा है जबकि वह सोने की ज़ंजीर के सहारे तुम्हारे गले में लटक रहा है?"

राजकुमारी ने उसे देखा और खिलखिलाकर हँस पड़ी।" धत यह तो बहुत आसान है, "उसने



कहा। जब मेरा कोई दाँत टूट जाता है तो उसकी जगह दूसरा निकल आता है कि नहीं?"

"अरे हाँ।" विदूषक बोला। "और जब यूनिकार्न नाम के जानवर का सींग झड़ जाता है तो उसकी जगह उसके माथे के बीचों-बीच दूसरा सींग उग आता है।"

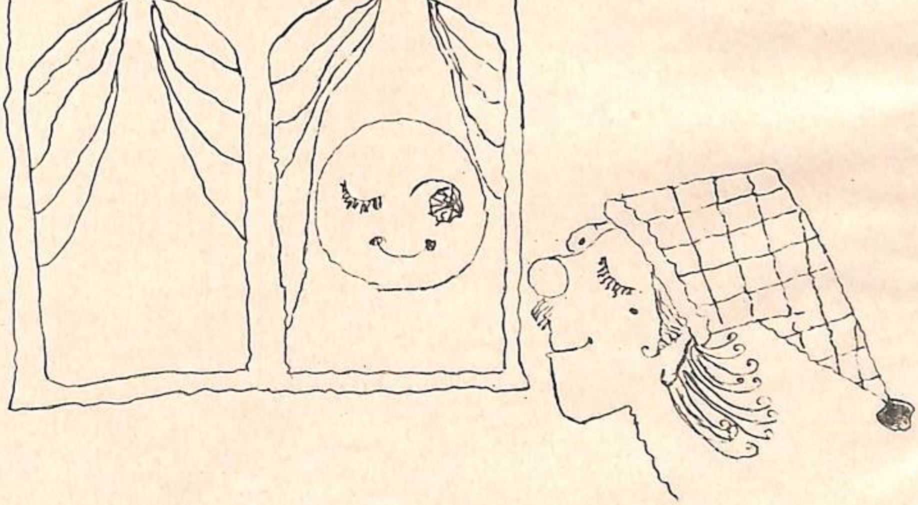
"बिल्कुल ठीक", राजकुमारी ने कहा, " और जब शाही माली बाग में फूलों को काटता है, तो उनकी जगह दूसरे फूल निकल आते हैं।"

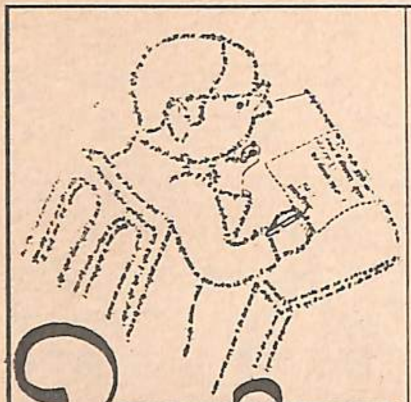
"यह मुझे सूझना चाहिए था", विदूषक ने कहा, "क्योंकि दिन की रोशनी के साथ भी ठीक ऐसा ही होता है।"

"और चन्द्रमा के साथ भी ठीक ऐसा ही होता है," राजकुमारी लैनोर ने कहा, "मुझे लगता है कि सभी चीज़ों के साथ ठीक ऐसा ही होता है।" उसकी आवाज़ मद्धिम हो गई और कुछ देर में बन्द हो गई। विदूषक ने देखा कि राजकुमारी सो गई है। उसने बड़े आराम से उसके ऊपर रज़ाई डाल दी।

लेकिन कमरा छोड़ने से पहले वह खिड़की तक गया और चन्द्रमा को आँख मार दी, क्योंकि विदूषक को ऐसा लग रहा था कि जैसे चन्द्रमा ने भी उसे आँख मारी है।

अंग्रेज़ी से अनुवाद : तेजी ग्रोवर





सवालीराम

पिछले दिनों अखबारों के पहले पन्नों पर बड़े-बड़े अक्षरों में ख़बरें छपीं- सूरत में प्लेग का भीषण प्रकोप, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली में भी प्लेग फैला; म.प्र. की राजधानी भोपाल भी प्लेग प्रभावित; प्लेग के कारण दिल्ली के स्कूल-कॉलेज बन्द; देशव्यापी सफाई अभियान; चूहों से सावधान;........ । ऐसी तमाम खबरें तुमने भी पढ़ी होंगी। तुम्हारे मन में ज़रूर यह जिज्ञासा होगी कि आखिर यह बीमारी क्या है? कैसे होती है? क्या लक्षण हैं इसके? कैसे बचा जाए इससे? इसमें चूहों का क्या रोल है? आदि-आदि। हमने सोचा कि तुम्हारे ढेर सारे खत आने लगें, इससे पहले हम ही इन सवालों के जवाब तुम तक पहुँचा दें।

पहले तो हम प्लेग के इतिहास को देखें। वैसे प्लेग कोई नई बीमारी नहीं है। पुराने ग्रन्थों में भी इस तरह की बीमारी का जिक्र मिलता है लेकिन फिर भी यह रोग दूसरे साधारण रोगों की श्रेणी में नहीं आता है। व्यापक रूप से फैलने पर यह महामारी का रूप ले लेता है। हाँ, कई बार प्लेग के छिटपुट केस भी सामने आते हैं पर ऐसे वाकये बहुत कम ही दिखते हैं। यह अभी तक तीन-बार दुनिया में महामारी के रूप में फैल चुका है।

प्लेग यूँ तो कुछ जंगली चूहों में पाई जाने वाली बीमारी है। इसके जीवाणुओं की प्राकृतिक पोषक चूहों की कुछ प्रजातियाँ होती हैं। ये प्रजातियाँ दुनिया में कहीं-कहीं पाई जाती हैं। और इन प्रजातियों में भी कुछ ही चूहे ऐसे होते हैं जिनके खून में प्लेग के जीवाणु पाए जाते हैं। यह जीवाणु पेस्चुरेला परिवार का सदस्य है और इसका नाम यार्सिनिया पेस्टिस है। इसके बारे में यार्सिन नामक वैज्ञानिक ने पता लगाया था जिसके नाम पर इसका नामकरण हुआ। अधिकांश जीवाणुओं की तरह ही यह भी इतना छोटा होता है कि इसे खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता। यह जीवाणु साधारण तापमान पर आसानी से पनप सकता है। इसकी रचना बेलनाकार होती है और इसके सिरे बिन्दु के आकार के होते हैं। आमतौर पर तेज़ गर्मी 50° C से 55° C के तापमान पर यह मर जाता है।

अब सवाल यह उठता है कि आमतौर पर जंगली और खेत के चूहों की कुछ प्रजातियों में पाई जाने वाली यह बीमारी इन्सानों को कैसे हो जाती है? आमतौर पर यह बीमारी किसी असाधारण परिस्थिति जैसे भूकम्प, बाढ़, सूखा, जंगल में आग लगना आदि के बाद फैलती है। ऐसी परिस्थितियों में जंगली चूहों के रहने की जगह अस्त-व्यस्त हो जाने के कारण चूहे इन्सानों की बस्तियों के आसपास घर बनाने को मजबूर हो जाते हैं। यहाँ ये जंगली चूहे घरेलू चूहों या अन्य जानवरों के सम्पर्क में आते हैं और प्लेग के जीवाणु का फैलाव यहीं से शुरू होता है। इन जीवाणुओं को फैलाने का काम जंगली चूहों के शरीर और खून पर पलने वाले पिस्सू करते हैं। ये पिस्सू जब संक्रमित जंगली चूहे का खून पीते हैं तो जीवाणु उनके पेट में चले जाते हैं। फिर यही पिस्सू अगर किसी घरेलू चूहे को या चूहों के अभाव में कुत्ता, बिल्ली या इन्सान को काट लें तो वे भी संक्रमित हो जाते हैं। पर यह तभी होता है जब किसी वजह से चूहों की कमी हो जाए। वर्ना आमतौर पर ये पिस्सू चूहों का खून पीना ही पसन्द करते हैं।

अब रहा सवाल बीमारी का। तुमने सुना या पढ़ा होगा कि प्लेग की बीमारी तीन किस्म की होती है। पर इसे फैलाने वाला जीवाणु तो वही होता है- यार्सिनिया पेस्टिस। कौन से किस्म का प्लेग रोगी को होगा यह इस पर निर्भर करता है कि जीवाणु ने शरीर के किस हिस्से पर अपना प्रभाव डाला है। सबसे आम किस्म का प्लेग

रोगी की लसीका-ग्रन्थियों को प्रभावित करता है। इससे 6, 7, दिनों के अन्दर ही इन ग्रन्थियों में (यानी जाँघ, बगलें, गर्दन आदि) जीवाणुओं की संख्या तेज़ी से बढ़ती जाती है और इनमें सूजन आने लगती है। ये सूजन गठानों की तरह दिखती हैं। इन्हें ब्यूबो कहते हैं और इस किस्म के प्लेग को ब्यूबोनिक प्लेग। अगर इसी चरण पर रोग को पहचानकर उसका इलाज कर लिया जाए तो यह बढ़ता नहीं है। ऐसा न होने पर यह फेफड़ों में भी फैल जाता है। इसे न्यूमोनिक प्लेग कहते हैं। इस चरण में प्लेग खाँसी या छींक के साथ निकलने वाले थूक/ बलगम के छोटे-छोटे कणों के जरिए एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैल सकता है। अगर न्यूमोनिक प्लेग का भी इलाज न हो तो रोग के जीवाणु पेट की ग्रंथियों में पहुँचकर खून की नलियों में फैल जाता है। बीमारी के इस चरण को सेप्टिसिमिक प्लेग कहते हैं।

प्लेग की पहचान करना बहुत आसान नहीं होता क्योंकि इसके शुरूआती लक्षण मलेरिया या मोतीझरा से मिलते-जुलते होते हैं। इसमें शुरू में तेज़ बुखार के साथ ठंड लगना, कंपकंपी, सिरदर्द, उल्टियाँ, नब्ज़ की गति बढ़ी हुई, रक्तचाप में गिरावट, सांस लेने में परेशानी आदि होते हैं। हाँ, इस सबके साथ जो लक्षण खास प्लेग में दिखता है, वह है बहुत अधिक शारीरिक थकान। इसके साथ ही ब्यूबोनिक प्लेग के स्पष्ट लक्षण होते हैं जाँघों, गर्दन, बगलों या दूसरी लसीका (लिम्फ) ग्रन्थियों में गठान पड़ जाना।

प्लेग से बचने या उसके रोकथाम का एक आसान तरीका है साफ-सफाई बरतना। परन्तु यदि यह रोग महामारी की तरह फैले तो साफ-सफाई से इसे सिर्फ फैलने से ही रोका जा सकता है। और न्यूमोनिक प्लेग के फैलाव को रोकने का तो वही तरीका है जो हम सर्दी-खांसी को फैलने से रोकने के लिए उपयोग करते हैं- खांसते या छींकते समय मुँह पर कपड़ा रखना। यूँ तो प्लेग खतरनाक, जानलेवा और तेज़ी से फैलने वाली बीमारी है, पर लाइलाज नहीं। यदि समय रहते इस बीमारी की पहचान हो जाए तो इससे बचा जा सकता है। आजकल इस बीमारी का इलाज आयुर्वेद, होम्योपैथी और अंग्रेजी दवाएँ- तीनों विधियों से किया जाता है।

यदि हममें से कोई कभी प्लेग का शिकार हो भी जाए तो मरीज़ के साथ कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए। जैसे उसके कपड़े, बिस्तर, खाने के बर्तन आदि सावधानी से और सफाई से रखने चाहिए। इसी तरह से मरीज जहाँ शौच आदि के लिए जाता हो वह जगह बिल्कुल साफ रखना चाहिए। और मरीज़ के सम्पर्क में जितने कम-से-कम लोग आएँ, उतना अच्छा।

❑❑

भूल सुधार

सितम्बर, 94 के अंक में 'पढ़ाई का बोझ कैसे कम हो?' पर राष्ट्रीय सलाहकार समिति की रपट प्रकाशित हुई थी। इस सन्दर्भ में समिति के सदस्य प्रो. कृष्ण कुमार का एक पत्र हमें मिला है-

मुझे यशपाल समिति की रपट पर 'चकमक' की रिपोर्ट देखकर प्रसन्नता तो हुई, पर हमारी आख़िरी सिफ़ारिश को आपने एकदम बिगाड़ दिया है। आपने लिखा है- 'नागरिक शास्त्र और भूगोल को बच्चों को जिस तरह पढ़ाया जाता है, वह बच्चों को रटने के लिए बाध्य करता है। अतः उसकी जगह...' (पृष्ठ-14)। स्पष्ट ध्वनि निकलती है गोया यशपाल रपट नागरिक शास्त्र और भूगोल दोनों को हटाने की बात कहती है। हमारे शब्द हैं-

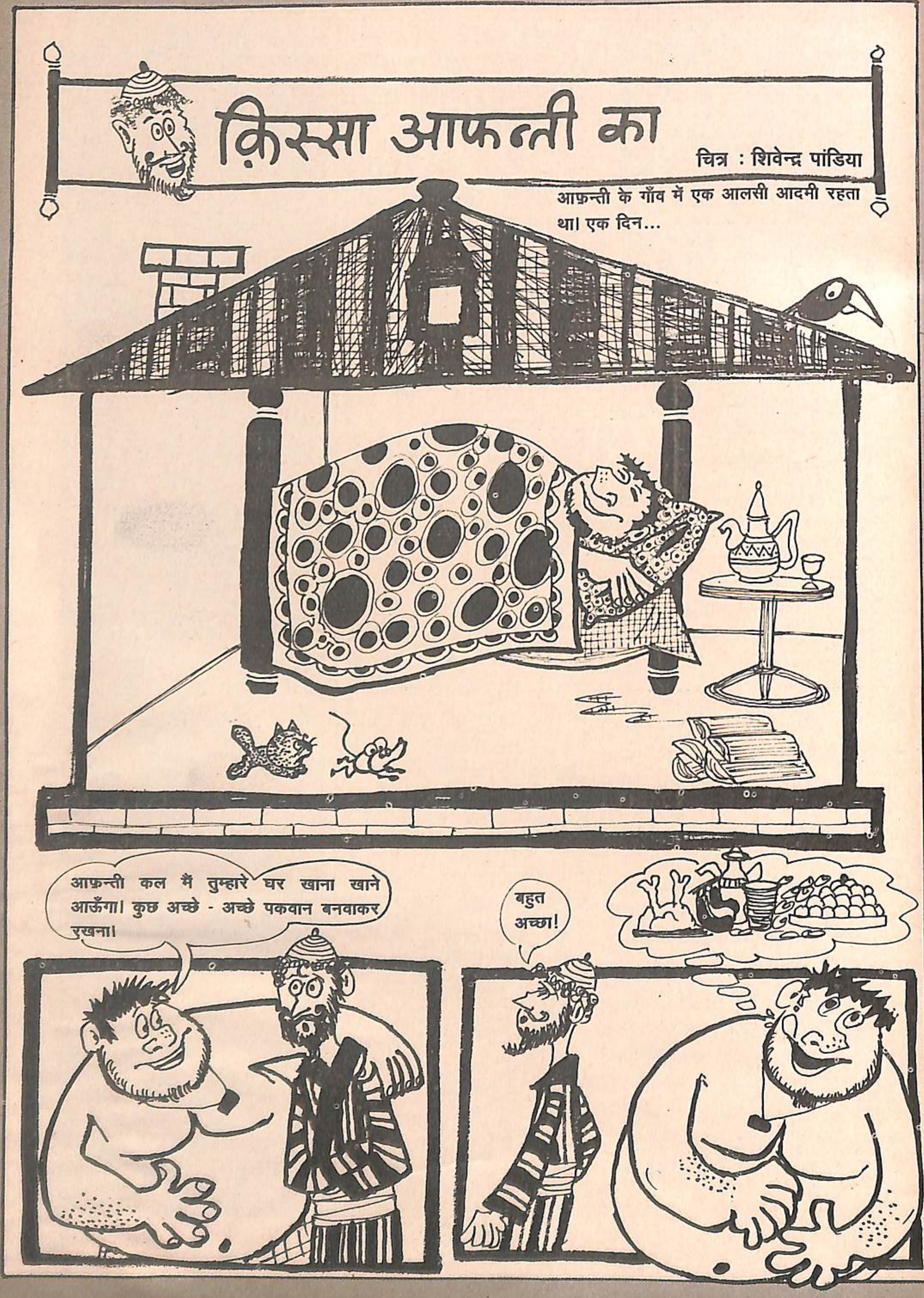
The Civics as it is taught today, puts a great load on children's capacity to memorise. Therefore, it may be dropped in its present form.....

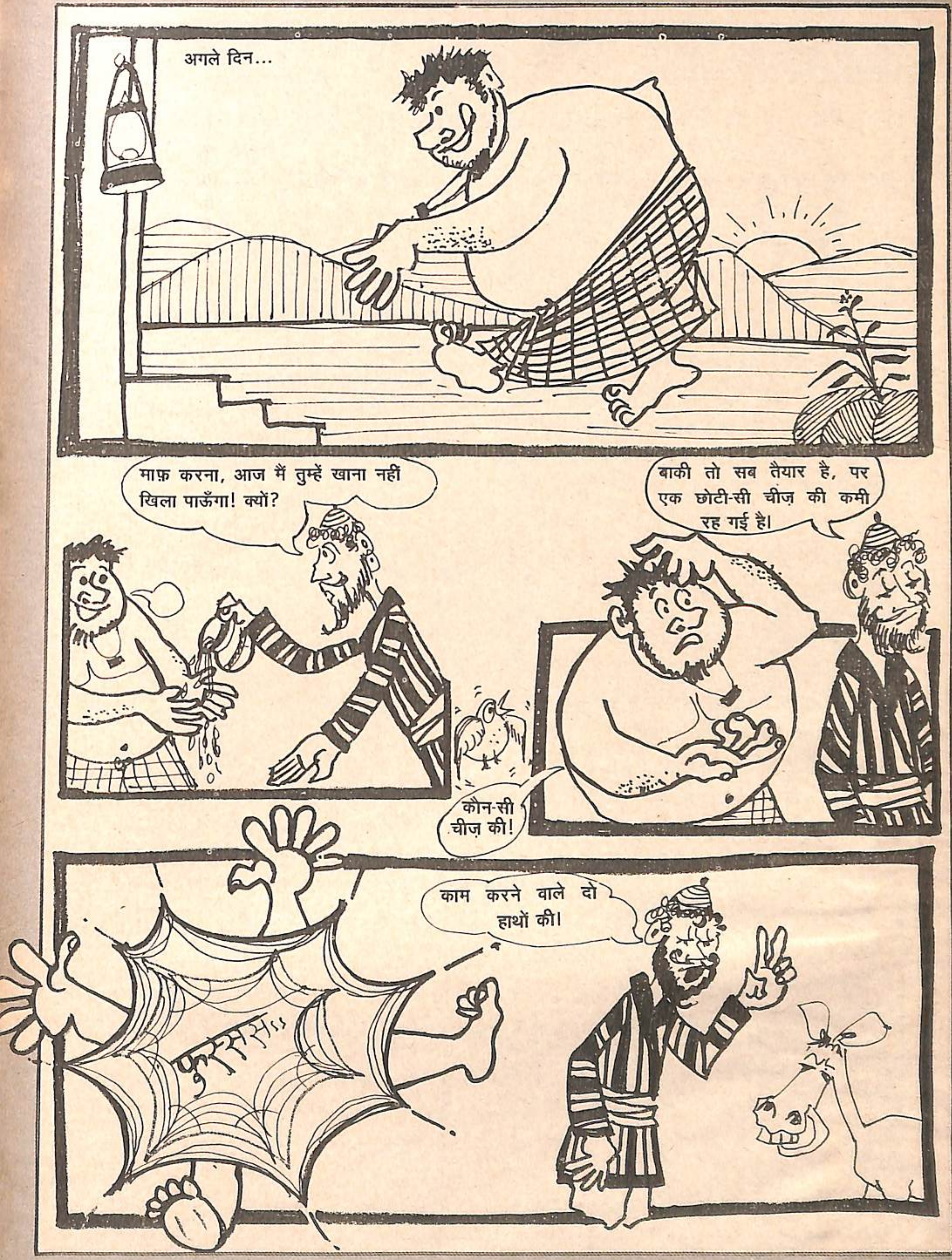
यदि आप इस आशय का स्पष्टीकरण छाप सकें तो यशपाल समिति के एक सदस्य के नाते मुझे प्रसन्नता होगी।

❑ प्रो. कृष्ण कुमार, दिल्ली, सदस्य, यशपाल समिति

(हमें खेद है कि असावधानी वश समिति की उक्त सिफारिश में बदलाव आ गया है। वास्तव में उसका हिन्दी अनुवाद इस तरह होना चाहिए था, 'नागरिक शास्त्र को आज जिस तरह पढ़ाया जाता है वह बच्चे की स्मरण क्षमता पर भारी बोझ डालता है। इसलिए इसे अपने वर्तमान स्वरूप में समाप्त कर दिया जाए..... और आज इसके बदले 'समसामयिक अध्ययन' को शुरू किया जाए। इसी प्रकार भूगोल के अध्ययन को समसामयिक वास्तविकताओं से जोड़ा जाए।

❑ सं.)


क़िस्सा आफन्ती का
चित्र : शिवेन्द्र पांडिया
आफ़न्ती के गाँव में एक आलसी आदमी रहता था। एक दिन...
आफ़न्ती कल मैं तुम्हारे घर खाना खाने आऊँगा। कुछ अच्छे - अच्छे पकवान बनवाकर रखना।
बहुत अच्छा!


अगले दिन...
माफ़ करना, आज मैं तुम्हें खाना नहीं खिला पाऊँगा! क्यों?
बाकी तो सब तैयार है, पर एक छोटी-सी चीज़ की कमी रह गई है।
कौन-सी चीज़ की!
काम करने वाले दो हाथों की।

खेल खेल में

आओ करें एक सर्वे

अरे, कहीं सर्वे शब्द पढ़कर ही अचकचा तो नहीं गए? हो सकता है तुमने कभी सर्वे खुद किया भी हो। पर तुम्हें पता भी न हो कि तुम सर्वे कर रहे हो। शायद सर्वे का अर्थ तुम्हारे लिए धूप में मारे-मारे फिरते, ऊल-जलूल सवाल करते, कागज़-पत्तर भरते कुछ सरकारी कर्मचारी या शिक्षक होंगे। पर सर्वे करना भी बहुत मज़े का काम हो सकता है। दरअसल आसपास की चीज़ों के बारे में जानकारी इकट्ठी करना और उस जानकारी के आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुँचना, यही तो है सर्वे। और तो और इसे हम कभी-कभी मज़ेदार खेल में भी बदल सकते हैं। चलो देखें कैसे।

आओ कुछ ऐसा सर्वे करें कि न तो तुम्हें कहीं बाहर जाना पड़े, न ही किसी महँगे साज़ोसामान की ज़रूरत पड़े। क्यों न हम अपनी उँगलियों के निशान जाँचें। क्या तुम जानते हो कि दुनिया में हर व्यक्ति की उँगलियों के निशान दूसरे की उँगलियों से बिल्कुल फ़र्क होते हैं? इस मामले में हर इन्सान ख़ास होता है और सारी दुनिया में उसका कोई जोड़ीदार नहीं होता। वैसे इस बात का पता वैज्ञानिकों ने आज से लगभग डेढ़-सौ साल पहले ही लगा लिया था। तभी से पुलिस इस ख़ासियत का इस्तेमाल अपराधियों को पकड़ने के लिए करती आ रही है।

अच्छा चलो अब काम शुरू करते हैं। जल्दी से ज़रूरी सामान बटोर लाओ। क्या तुम्हारे पास स्टैम्प पैड है? नहीं हो तो किसी बेकार कपड़े की चार-छह तहें जमा लो। अब इस पर स्याही या पानी में घुला रंग डाल दो। बन गया तुम्हारा सस्ता सुन्दर स्टैम्प पैड। अब कुछ कागज़ बटोर लो और पेन या पेंसिल। एक बात का ध्यान रखना। कागज़ बहुत कीमती चीज़ है। कई पेड़ों के कटने पर बनता है। इसलिए ऐसे खेलों के लिए एक तरफ इस्तेमाल किया हुआ कागज़ काम में लाओ।

सामान इकट्ठा हो गया हो तो काम शुरू करो। अपने घर के सभी सदस्यों के दोनों हाथों की सभी उँगलियों के निशान कागज़ पर ले लो। निशान लेने के लिए उँगली को हल्के से स्टैम्प पैड पर फेरो। फिर उँगली को धीरे-से कागज़ पर दबाओ। ध्यान रखना कि उँगली कागज़ पर आजू-बाजू सरके नहीं, नहीं तो निशान फैल जाएगा। तुम चाहो तो इस जानकारी को एक चार्ट बनाकर व्यवस्थित रख सकते हो।

इस सूची में दोस्तों के नाम जोड़कर अपने सर्वे को और व्यापक बना सकते हो।

 बायाँ हाथ					 दायाँ हाथ				
चौथी	तीसरी	दूसरी	पहली	अँगूठा	अँगूठा	पहली	दूसरी	तीसरी	चौथी
तुम खुद									
अम्माँ									
बाबूजी									
दीदी									
....									
....									

अब जो छापे या निशान तुमने इकट्ठे किए हैं, उन्हें ज़रा गौर से देखो। दो बातें खोजनी हैं तुम्हें। एक तो यह कि क्या इनमें तुम कोई ख़ास आकार या डिज़ाइन ढूँढ पा रहे हो जिन्हें मोटे-मोटे तौर पर कोई नाम दे सकते हो?

बहुत ध्यान से हरेक छापे को देखने पर तुम पाओगे कि सब लोगों की उँगलियों के निशानों को मोटे तौर पर चार मुख्य आकारों में बाँटा जा सकता है। अलग-अलग करने के लिए इन्हें चार नाम देने होंगे।



मेहराबदार



पहाड़नुमा



छल्लेदार



चक्करदार

ठीक हैं न ये नाम? कई बार कुछ लोगों की उँगलियों में छल्लों और चक्करों की मिली-जुली बनावट दिखती है। इसे हम संयुक्त बनावट कह सकते हैं।

दूसरा तुम्हें यह खोजना है कि क्या तुम्हारी सूची में कोई दो व्यक्ति हैं जिनकी उँगलियों के छापे बिल्कुल एक जैसे हों? ज़रुरत पड़े तो हैंडलेंस की मदद से देखो।

तुमने देखा होगा कि वे लोग जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते, हस्ताक्षर करने की जगह पर अपने अँगूठे की छाप लगा देते हैं। यानी हर व्यक्ति का जैसे अपना एक ख़ास हस्ताक्षर होता है, वैसे ही हर व्यक्ति के अँगूठे की छाप भी ख़ास होती है।

क्या इस दौरान तुम्हें कोई ऐसा *व्यक्ति मिला* जिसकी सारी उँगलियों के निशान एक-से हों?

क्या तुम सोच सकते हो कि मुख्यतः चार आकारों में बँट जाने के बावजूद हम सब की उँगलियों के निशान अलग-अलग कैसे हैं? अपने और अपने दोस्त के अँगूठे के निशान में अन्तर ढूँढो और उनकी एक सूची बनाओ।

तुमने शुरू में पढ़ा कि उँगलियों की इस ख़ासियत का उपयोग पुलिस अपराधियों को पकड़ने में करती है। देखना चाहोगे कैसे? पहले कुछ दोस्त एक जगह इकट्ठा होकर दो टोलियाँ बना लो। कुछ सफ़ेद चॉक ले आओ और एक सादा स्टील का गिलास भी लेते आना।

अब एक टोली (जिसे खोजी टोली कहेंगे) कमरे से बाहर चली जाए। दूसरी टोली में से कोई एक अपनी उँगलियों पर चॉक फिराकर स्टील के गिलास को पकड़े ताकि पाँचों उँगलियों के निशान उस पर पड़ जाएँ। एक बार में न हो तो गिलास को कपड़े से पोंछकर दोबारा, तिबारा भी किया जा सकता है। जब अच्छी तरह से स्पष्ट छापे पड़ जाएँ तो टोली के बाक़ी लोग भी अपनी उँगलियों पर चॉक फिरा लें। ऐसा करना क्यों ज़रूरी है यह तुम खुद ही सोचो।

अब खोजी टोली को कमरे में बुला लो। सबसे पहले वह ध्यान से गिलास पर पड़े छापों के आकारों को पहचानने की कोशिश करे। ज़रूरत हो तो इन आकारों को काग़ज़ पर उतार लो। फिर दूसरी टोली के सारे खिलाड़ियों के उँगलियों के छापे काग़ज़ पर लेकर पता लगाए कि किसने गिलास पकड़ा था। जब खोजी टोली 'गिलास पकड़ने वाले' को ढूँढ ले तो टोलियाँ बदलकर फिर खेल सकते हो।

हम-तुम अगले अंक में भी ऐसा ही कोई सर्वे करेंगे। क्या तुम्हारे कोई सुझाव हैं कि किस विषय पर करें? तुरन्त लिख भेजो हमें। ❑❑



माथापच्ची

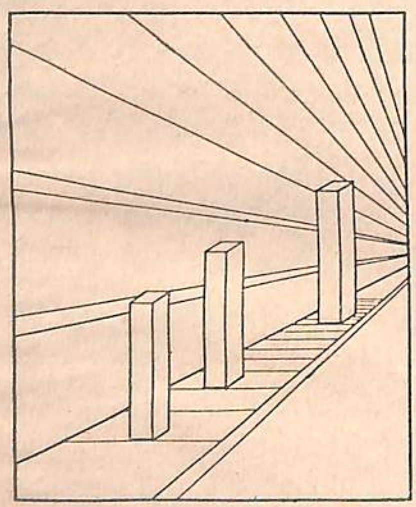
(1)

एक बड़े भवन को दो कारीगर बाहर से रंग कर रहे थे। उन्हें पूरा भवन पोतने में तीन दिन लगे। अगला काम इससे दुगने चौड़े और दुगने लम्बे भवन की पुताई का था। बताओ तो इस बड़े भवन को बाहर से पोतने में इन्हीं दो कारीगरों को कितने दिन लगेंगे?

(2)

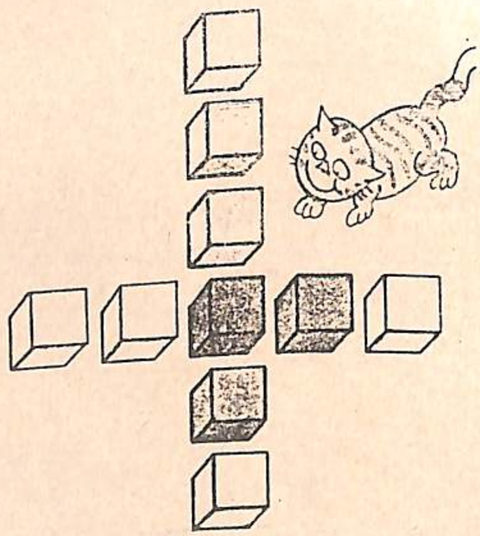
एक घन की छहों सतहों पर 1 से 6 अंक लिखे हुए हैं। 42 हासिल करने के लिए घन को कम-से-कम कितनी बार उछालना पड़ेगा? और अगर साथ में यह शर्त भी हो कि कोई भी अंक लगातार दो से अधिक बार आए तो उसे नहीं गिना जाएगा, तो?

(3)



इस चित्र को गौर से देखकर बताओ सबसे लम्बा खम्भा कौन-सा है?

(4)



क्या तुम चित्र में दिखाए गुटकों में से सिर्फ एक गुटके की जगह में फेरबदल करके कुछ यूँ कर सकते हो कि गुटके धन के आकार में जम जाएँ और धन की दोनों भुजाओं में 6-6 गुटके हों। आसान है, बस थोड़ा-सा दिमाग लगाओ।

(5)

नीचे का हर सवाल एक श्रृखंला है। इसके सदस्यों में आपस में एक सम्बंध है। इस सम्बंध को पहचानकर तुम्हें हर श्रृखंला का अगला सदस्य ढूँढ निकालना है।

1. 1 1 2 3 5 ?
2. क ग ङ छ ?
3. 0 3 8 15 24?
4. 1 1 3 2 5 3?
5. ग, ज, ड, द,?
6. 3 6 9 12 ?

(6)

गुल्लू ने एक शाम माचिस की तीलियों के खेल दिखाना शुरू किया। एक खेल मुझे भी भा गया। उसने तीलियों के तीन ढेर जमाए। तीनों ढेरों में तीलियों की अलग-अलग संख्या थी। फिर उसने पहले ढेर से उतनी तीलियाँ उठाईं जितनी दूसरे ढेर में थीं और उन्हें दूसरे ढेर में मिला दिया। फिर दूसरे ढेर से उतनी तीलियाँ उठाईं, जितनी तीसरे ढेर में थीं और उन्हें तीसरे ढेर में ही मिला दिया। अन्त में उसने तीसरे ढेर से उतनी तीलियाँ उठाईं जितनी पहले ढेर में बची थीं और उन्हें पहले ढेर में मिला दिया। और तब सारे ढेरों में तीलियों की संख्या बराबर हो गई।

इस बीच मैंने कुल तीलियों की संख्या पता कर ली थी, वे 48 थीं। क्या तुम बता सकते हो कि शुरू में हर ढेर में कितनी तीलियाँ रही होंगी?

(7)

$$8 = \sqrt{4} + \sqrt{4} + \sqrt{4} + \sqrt{4}$$

$$13 = 4 + 4 + 4/.4$$

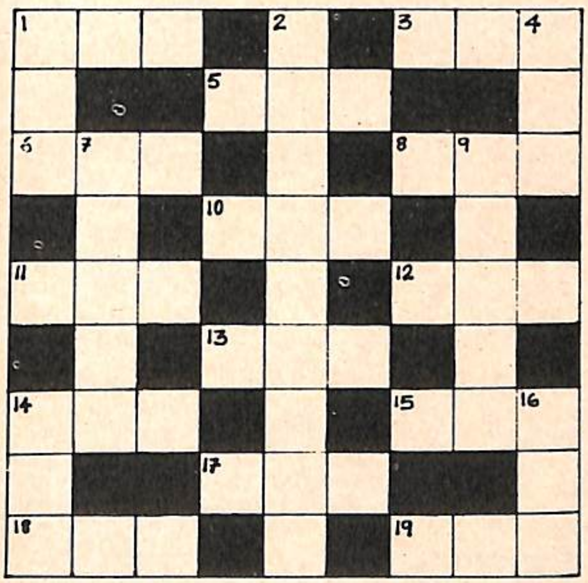
$$36 = \frac{4 \times 4}{4} - 4$$

इन समीकरणों में बाईं ओर दी संख्या को चार बार अंक 4 का उपयोग करके गणित की क्रियाओं की मदद से दर्शाया गया है। क्या इसी तरह तुम 18, 42, 50 और 68 को भी चार बार अंक 4 का उपयोग करके और +, - , ×, ÷ √ क्रियाओं का उपयोग करके दर्शा सकते हो? कोशिश कर देखो।

(8)

पानी में भीगकर फूली हुई एक कटोरी मूँगफली और एक कटोरी सूखी मूँगफली में से कौन-सी ज्यादा भारी होगी?

वर्ग पहेली-41



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. निपुण, योग्य (3)
3. गजरा में मात्राओं की उलटफेर कर जागो (3)
5. अचेत (3)
6. कान मरोड़ो तो घर मिलेगा (3)
8. धधकती आग की लौ के रंग वाला फूल (3)
10. भीड़ (3)
11. एक सुगंधित पेड़ (3)
12. दरार भी, डरपोक भी (3)
13. छोटा (3)
14. कमर में ही राशि है (3)
15. बस हर तरफ सबेरा है (3)
17. भाव अगर के जोड़-घटाने में कमी (3)
18. गोद ली हुई सन्तान (3)
19. ताक री में अन्धेरा (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. थमने की प्रक्रिया में पहला (3)
2. प्रसिद्ध भारतीय भौतिक वैज्ञानिक, जिनके नाम पर बम्बई में एक परमाणु अनुसंधान केन्द्र भी है (1, 2, 4, 2)
4. चाल, गति (3)
7. समय दिखाने वाला (5)
9. 'हवारपला' में कुछ है (5)
14. 'दरअसल' में खाने की सामग्री (3)
16. धोबी (3)

❑ प्रवीण नाग, जयपुर, राजस्थान द्वारा भेजी गई पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग-पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें! बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग-पहेली-41 का हल मार्च, 95 में देखें।

श्रद्धांजलि

श्री निरंकार देव सेवक

गत 29 अक्टूबर, 94 को भारतीय बाल साहित्य के भीष्म पितामह (बकौल डॉ. राष्ट्रबंधु) श्री निरंकारदेव सेवक नहीं रहे।

पिछले कुछ दिनों से वे अस्वस्थ्य थे और सचमुच भीष्म पितामह की तरह तीरों की सेज पर लेटे थे। ये तीर बाल साहित्य और बाल साहित्यकारों की उपेक्षा के थे। जो उनके पत्रों में बार-बार झलकते थे। ऐसा ही एक वाकया है। कुछ साल पहले ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के तहत उनकी कुछ किताबें उनके किसी प्रकाशक ने म.प्र. में सप्लाई की थीं। लेकिन बाद में कुछ अनियमितताओं के कारण योजना पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इससे प्रदाय की गई किताबों का भुगतान भी नहीं हो सका। फलस्वरूप सेवक जी को अपनी किताबों की रायल्टी भी नहीं मिल सकी। सम्भवतः उनकी मृत्यु तक स्थिति ज्यों की त्यों थीं। एक ताजा उदाहरण उनकी मृत्यु के समाचार का ही है। मृत्यु का समाचार ज्यादातर अखबारों में प्रकाशित ही नहीं हुआ।

सेवक जी का जन्म 1919 में उत्तरप्रदेश के बरेली कस्बे में हुआ था। वहीं शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने एम.ए. और एल.एल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। प्रारम्भ में अध्यापक रहे और फिर उन्होंने वकालत को जीवन-यापन का स्रोत बनाया। बाल साहित्य के अलावा उन्होंने बड़ों के लिए भी लिखा। बच्चों के लिए उनके 40 से अधिक कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिनमें प्रमुख हैं- **मुन्ना के गीत, धूप-छाया, चाचा नेहरू के गीत, दूध-जलेबी, माखन-मिसरी, रिमझिम, फूलों के गीत, पंचतन्त्री, मटर के दाने, ईसप की गीत कथाएँ** आदि। इसी तरह बच्चों के लिए कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त उनका **'बालगीत साहित्य'** नामक शोध ग्रन्थ बाल साहित्य के शोधकर्त्ताओं के लिए एक अनूठी पुस्तक साबित हुआ है। इसमें हिन्दी के बालगीत साहित्य के इतिहास और समीक्षा के अलावा अंग्रेजी, बंगाली, तेलगु और गुजराती बाल गीतों का हिन्दी के बालगीतों से तुलनात्मक उल्लेख भी है।



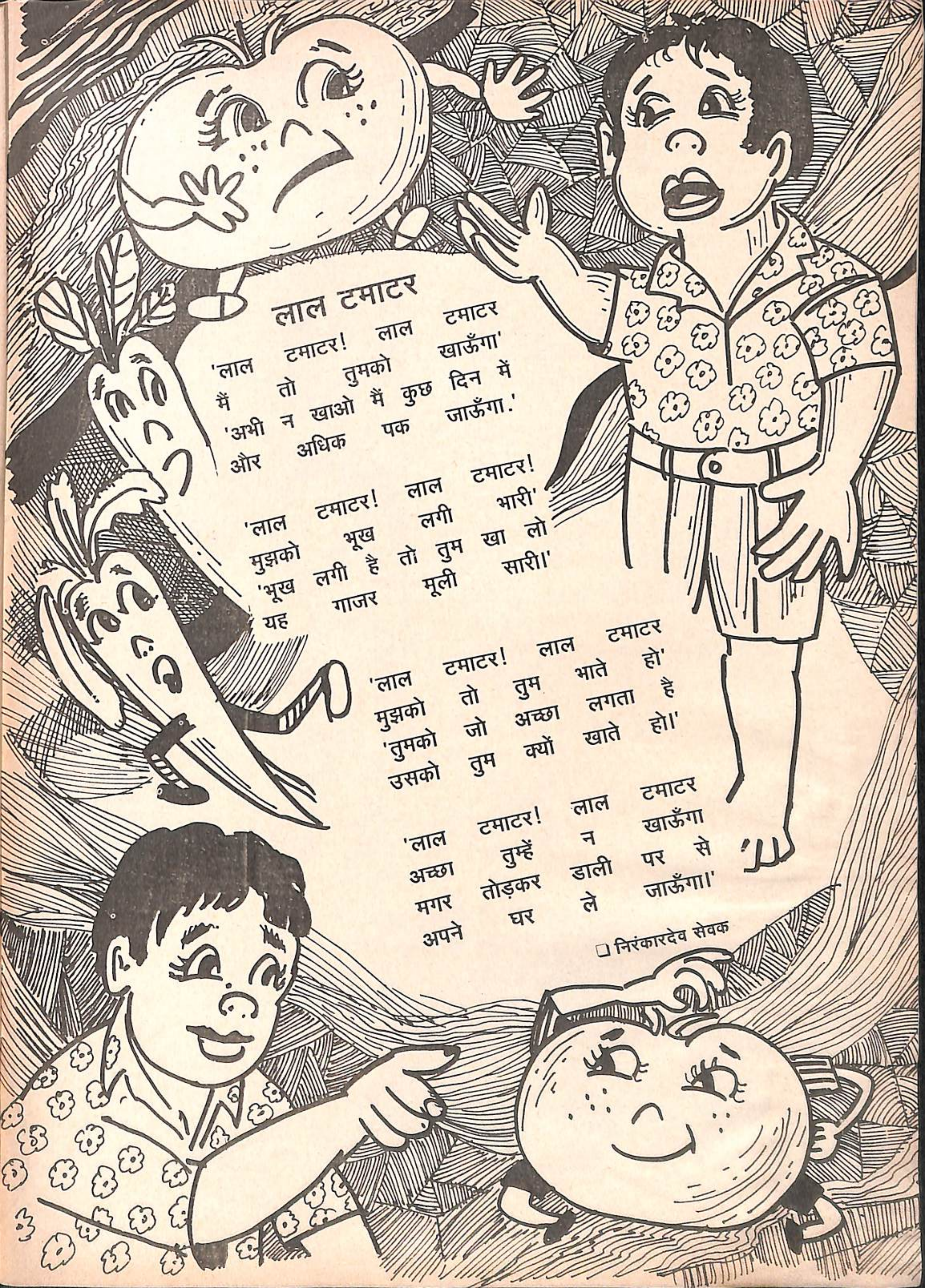
(छायाचित्र मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् के सौजन्य से)

सन् 88 में दिल्ली में आयोजित एक बाल साहित्य सम्मेलन में उनसे मिलने का मौका मिला था, हालाँकि उसके बाद कभी मुलाकात न हो सकी। पर उस एक मुलाकात की जो यादें हैं वे आज भी ज्यों की त्यों हैं। इसी आयोजन की एक परिचर्चा के दौरान मेरे वक्तव्य पर उन्होंने पास आकर मेरी पीठ थपथपाई थी। जो मेरे लिए एक सुखद अनुभव था। पत्रों के माध्यम से वे हमेशा चकमक के सम्पर्क में रहे। चकमक में उनकी कुछ कविताएँ तथा कुछ पौराणिक कहानियाँ जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण की थीं प्रकाशित हुईं।

चकमक के सौवे अंक के प्रकाशन के अवसर पर उन्होंने लिखा था, ***'चकमक ने इस युग के बच्चों को उनका खोया-सा जा रहा अपना संसार दिलाने में जो योगदान किया है, वह सर्वथा सराहनीय है।'***

नाम को वे निरंकार यानी बिना आकार के थे। लेकिन बाल साहित्य में वे अपना जो आकार (स्थान) बना गए हैं, उसे अनदेखा करना किसी भी पीढ़ी के लिए असम्भव होगा। चकमक बाल साहित्य के इस भीष्म पितामह को सादर श्रद्धांजलि देती है।

❑ राजेश उत्साही



लाल टमाटर

'लाल टमाटर! लाल टमाटर
मैं तो तुमको खाऊँगा'
'अभी न खाओ मैं कुछ दिन में
और अधिक पक जाऊँगा.'

'लाल टमाटर! लाल टमाटर!
मुझको भूख लगी भारी'
'भूख लगी है तो तुम खा लो
यह गाजर मूली सारी।'

'लाल टमाटर! लाल टमाटर
मुझको तो तुम भाते हो'
'तुमको जो अच्छा लगता है
उसको तुम क्यों खाते हो।'

'लाल टमाटर! लाल टमाटर
अच्छा तुम्हें न खाऊँगा
मगर तोड़कर डाली पर से
अपने घर ले जाऊँगा।'

□ निरंकारदेव सेवक

मुखौटे

तुमको खेल-खेल में कई बार मुखौटे बनाने की जरूरत पड़ती होगी। कुछ तो तुम लोग भी बना लेते होगे। कुछ हमारे पास भी हैं तो तुम इन्हें भी देखो और बनाओ। तरीका बिलकुल आसान है। वैसे तो तुम चित्रों को देखकर ही समझ सकते हो कैसे, क्या किया है। ये चीजें इक्कट्टी करो। कागज, की प्लेट और थोड़ा मोटा कागज, पतला पतंगी कागज, रंग, कैंची, मोटा धागा या ऊन, गोंद और जो तुम इकट्ठा कर सको जरूरत के हिसाब से।



पहले मोटे कागज में से गोला काट लो। गोले को अपने चेहरे पर लगाकर आँखों की जगह पर निशान बना लो। और फिर आँखों की जगह पर बनाए निशान को सावधानी से काट लो।

इसके बाद इनमें से जिस तरह का मुखौटा बनाना हो उस तरह से रंगों से रंग लो। अलग से नाक लगाना चाहो तो कागज से बनाकर लगा लो। लम्बे बाल लटकाना हो तो धागे या ऊन का प्रयोग कर सकते हो। दाढ़ी या मूँछ बनानी हो तो पतले कागज को क्रेप कागज जैसा मोड़कर लगा सकते हो।

एक मुखौटे में तो मुँह और दाँत भी बनाए हैं। कागज की प्लेट में आँखे बना कर मुँह की जगह पर कार्क लगा सकते हो। अपनी मन मर्जी से और भी चीजें जोड़ सकते हो।



मनुष्य महाबली कैसे बना!

पहले कारीगर

नौजवान कारीगरो! मैं तुम लोगों से बात कर रहा हूँ, जिन्होंने कुल्हाड़ी, रंदे, हथौड़े और बरमे का उपयोग करना अभी-अभी सीखा है। भावी इस्पात ढालने-वालो और रसायनज्ञों, मशीनों और हवाई जहाजों के डिज़ाइनरो, मकानों और जहाज़ों के बनाने वालों! मैं तुमसे बात कर रहा हूँ।

तुम जानते हो कि तुम्हारे औज़ार और जिस लकड़ी या धातु पर तुम काम कर रहे हो, उनकी आपस की लड़ाई कितनी ज़बरदस्त और सख़्त होती है, और इसमें प्राप्त विजय कितनी आनन्ददाई होती है।

जब तुम लकड़ी का एक टुकड़ा उठाते हो, तो तुम जो चीज़ बनाना चाहते हो, उसकी अपने दिमाग़ में कल्पना कर लेते हो। बात बड़ी ही आसान लगती है - यहाँ ज़रा-सा टुकड़ा काट दिया, यहाँ छेद कर दिया और यहाँ से ज़रा-सा टुकड़ा निकाल लिया। लेकिन लकड़ी राज़ी नहीं होती। वह अपने को काटनेवाले फल का पूरे ज़ोर से मुक़ाबला करती है।

एक के बाद दूसरा औज़ार लड़ाई में शामिल हो जाता है। अगर चाकू से काम नहीं चलता, तो कुल्हाड़ी से चल सकता है। अगर कुल्हाड़ी काफ़ी मज़बूत नहीं है, तो दर्ज़नों तेज़ दाँतोंवाला आरा लड़ाई को जारी रखता है।

और कुछ समय में वह सब फालतू सामग्री छीलन, छिपटियों और बुरादें में बदलकर अलग कर दी जाती है, जिसने तुम्हारी चाही गई आकृति को छिपाकर आँखों से ओझल कर रखा था।

तुम जीत गए। मगर जीत अकेले तुम्हारी ही नहीं है। तुम्हारी जीत उन सभी कारीगरों की बदौलत सम्भव हुई, जिन्होंने अनेक सदियों के दौरान उन औज़ारों का आविष्कार किया और उन्हें सुधारा, जिनका तुम उपयोग करते हो। जिन्होंने नई सामग्रियों की और उनके उपयोग के नए तरीक़ों की खोज की।

तुम उन पहले कारीगरों के बारे में पढ़ भी चुके हो, जिन्होंने पहले चाकू, कुल्हाड़े और हथौड़े बनाए थे। जिस तरह तुम्हारा काम कठिन है, इसी तरह उनका भी था, लेकिन इसने भी अन्त में उन्हें बड़ी खुशी दी।



ये पहले बढ़ई, किसान और राजगीर कपड़ों की जगह जानवरों की खालें पहना करते थे। उनके औज़ार बड़े भद्दे थे। डोंगी बनाने में वे कई महीने लगाते थे। हमारे लिए मूर्ति बनाना जितना मुश्किल है, उनके लिए खाना पकाने का मिट्टी का एक बर्तन बनाना उससे ज़्यादा मुश्किल था।

लेकिन ये बढ़ई, किसान और कुम्हार निर्माताओं, रसानयनज्ञों और इस्पात ढालने वालों की उस विशाल सेना के पहले सिपाही थे, जो अपने दैनिक श्रम से अब धरती का चेहरा बदल रहे हैं।

मिसाल के लिए, आदिकालीन कुम्हारों को ही ले लो। वे पहले आदमी थे, जिन्होंने एक नई तरह की सामग्री को तैयार किया, जो प्रकृति में नहीं मिलती थी। पहले, जब कोई प्रागैतिहासिक कारीगर चकमक की कुल्हाड़ी या हड्डी की काँटेदार बर्छी बनाता था, तब वह जिस सामग्री का उपयोग करता था, उसे बनाता नहीं था - वह बस उसकी सूरत बदल देता था। आदमी ने मिट्टी का एक बर्तन बनाया और उसे अलाव में पकाया। आग ने मिट्टी के सभी गुणों को बदलकर उसे ऐसा बना दिया कि उसे पहचाना भी नहीं जा सकता था।

पहले मिट्टी गीली होने पर हमेशा गारे में बदल जाती थी। लेकिन आग में पकाने के बाद उसे पानी का कोई डर न रहा। उसमें पानी डाला जा सकता था और इससे न उसकी आकृति बदलती थी, न वह मुलायम हो जाती थी।

प्रागैतिहासिक मनुष्य ने मिट्टी को एक नई वस्तु में बदलने के लिए आग का उपयोग किया। यह एक दुहरी जीत थी - मिट्टी पर जीत और आग पर जीत। ठीक है कि आग ने मनुष्य को ठण्ड से बचाकर, जंगली जानवरों को दूर रखकर, जंगलों को साफ़ करने में उसकी सहायता करके और डोंगी बनाते समय उसके कुल्हाड़े की मदद को आकर पहले भी मनुष्य की सेवा की थी। लोग आग पैदा करने का भेद भी जान चुके थे, जब भी वे लकड़ी के दो टुकड़ों को आपस में रग़ड़ते आग उनके सामने निश्चय ही उपस्थित हो जाती थी।



अब आदमी ने आग को एक नया और कहीं मुश्किल काम दिया - एक वस्तु को दूसरी वस्तु में बदलने का काम।

जब मनुष्य ने आग के अद्भुत गुणों को जान लिया, तो उसने उससे मिट्टी पकवाना, अपना भोजन तैयार करवाना, अपनी रोटी सिकवाना और ताँबा पिघलवाना शुरू किया।

आज तुम्हें पूरी दुनिया में मुश्किल से ही कोई ऐसा कारखाना मिलेगा, जो किन्हीं वस्तुओं को अन्य वस्तुओं में बदलने के लिए आग का इस्तेमाल न करता हो।

आग कच्ची धातु से लोहा निकालने, रेत से काँच और लकड़ी

से काग़ज़ बनाने में हमें सहायता देती है। इस्पात ढालनेवालों और रसायनज्ञों की एक पूरी फ़ौज इस्पात मिलों में जलने वाली भट्ठियों को नियंत्रित करती है। और इन सभी भट्ठियों का प्रारम्भ उस चूल्हे में हुआ था, जिसमें प्रागैतिहासिक कुम्हार ने अपना पहला, भद्दा और छोटा-सा तिकोना बर्तन पकाया था।

बीज साक्षी है

पुरातत्वविदों को एक प्रागैतिहासिक शिविरस्थल पर और कई चीज़ों में मिट्टी के कई मर्तबान भी मिले।

बाहर की तरफ़ इन मर्तबानों पर आपस में गुँथी हुई लकीरोंवाले एक बड़े ही सरल डिज़ाइन की सजावट थी। यह डिज़ाइन इस बात का सुराग़ है कि प्रागैतिहासिक कुम्हार अपने बर्तनों को किस प्रकार आकृति देते और पकाते थे।

एक बुनी हुई टोकरी को भीतर की तरफ़ मिट्टी की तह से ढँक दिया जाता था। इसके बाद टोकरी को आग पर रख दिया जाता था। सरकण्डे जल जाते थे और भीतर का बर्तन बच जाता था। पौधों के तनों ने उसकी सतह पर जो आपस में गुँथे हुए निशान छोड़ दिए थे, वे ही डिज़ाइन बन जाते थे।

बाद में जब कुम्हारों ने मिट्टी के बर्तनों को बुनी हुई टोकरियों के बिना पकाना सीख लिया, तब भी वे अनपके बर्तनों को उन्हीं चारख़ानेदार डिज़ाइनों से ही सजाते रहे। उनका ख्याल था कि उनकी दादियाँ-परदादियाँ जिस तरह के बर्तन इस्तेमाल करती थीं, उनका बर्तन अगर उन्हीं जैसा न हुआ, तो वह खाना ठीक से न पकाएगा।

प्रागैतिहासिक कारीगरों का विश्वास था कि प्रत्येक वस्तु में कोई अज्ञात, रहस्यमय शक्ति और गुण होता है। कौन जाने, बर्तन की असली शक्ति शायद उसके डिज़ाइन में ही हो! अगर उन्होंने डिज़ाइन बदल दिया, तो कहीं ज़िन्दगी भर पछताना न पड़े, क्योंकि तब बर्तन दुर्भाग्य, बुरा समय और भुखमरी ला सकता था। कभी-कभी बर्तन को बुरी नज़र से बचाने के लिए कुम्हार उस पर कुत्ते की तस्वीर बना दिया करता था।



कुत्ता मनुष्य का सहायक था, कुत्ता उसके साथ शिकार पर जाता था और उसके घर की रखवाली करता था।

बर्तन पर कुत्ते का चित्र बनाते समय कुम्हार अपने मन में कहता - कुत्ता रखवाला होता है, वह बर्तन की और उसमें रखी हर चीज़ की रखवाली करेगा।

चारख़ानेदार डिज़ाइनों से सजे मिट्टी के मर्तबान कई जगहों पर

मिले हैं। इसमें से एक, जो फ्रांस में कांपीनी नगर के पास मिला था, बड़ा मशहूर हो गया। उसकी जाँच करते समय पुरातत्वविदों को उस पर जौ के एक दाने की छाप मिली।

अपनी खोज को उन्होंने बड़े जोश के साथ देखा। यह मात्र एक दाना नहीं था, यह एक साक्षी था, प्रागैतिहासिक मानव के जीवन में जो बड़े-बड़े परिवर्तन आ चुके थे, उनका एक नन्हा-सा साक्षी।

जहाँ अनाज का दाना था, वहाँ खेती भी हो सकती थी। यही कारण था कि उन्हें उसी स्थल पर अनाज कूटने की ओखलियाँ और चकमक की कुदालें भी मिलीं।

शिकारी और मछियारे प्रत्यक्षतः किसान भी बन गए थे। यह कैसे हुआ।

पहली बात तो यही है कि क़बीले के सभी सदस्य शिकार या मछली पकड़ने का काम नहीं करते थे। जब मर्द शिकार पर गए होते थे, औरतें और बच्चे टोकरियाँ और मिट्टी के बर्तन लिए खाने योग्य हर चीज़ को इकट्ठा करते इधर-उधर भटकते रहते थे। समुद्रतट पर वे शंबूक इकट्ठा करते थे। ज़ंगलों में वे खुमियाँ, बेरियाँ और गिरीफल बीनते थे। उन्हें शाहबलूत के फल खाने से भी कोई परहेज़ न था। वे उसे पीस लेते थे और उसके आटे की रोटियाँ सेंक लेते थे।

प्रागैतिहासिक क़बीले को जब जंगली मधुमक्खियों का छत्ता मिल जाता था, तब बड़ा आनन्द मनाया जाता था।

इस प्रकार, गरम जलवायु ने लोगों को एक बार फिर बिनाई करनेवाला बना दिया। देखने में यह पीछे की तरफ़ एक कदम लगता था। वास्तव में, यह आगे की तरफ़ एक छलांग थी, क्योंकि फिर, बिनाई को बुआई से जो रेखा अलग करती है, उसे पार करके उन्होंने बुआई शुरू कर दी।

औरतें फल और बेरियों के साथ जौ तथा गेहूँ जैसी जंगली धान्य घासों के दाने लेकर आती थीं। अनाज के दानों को वे बर्तनों और टोकरियों में रख देती थीं, लेकिन कभी-कभी वे दो-तीन दाने ज़मीन पर गिरा देती थीं और वे समय आने पर उगना शुरू कर देते थे।



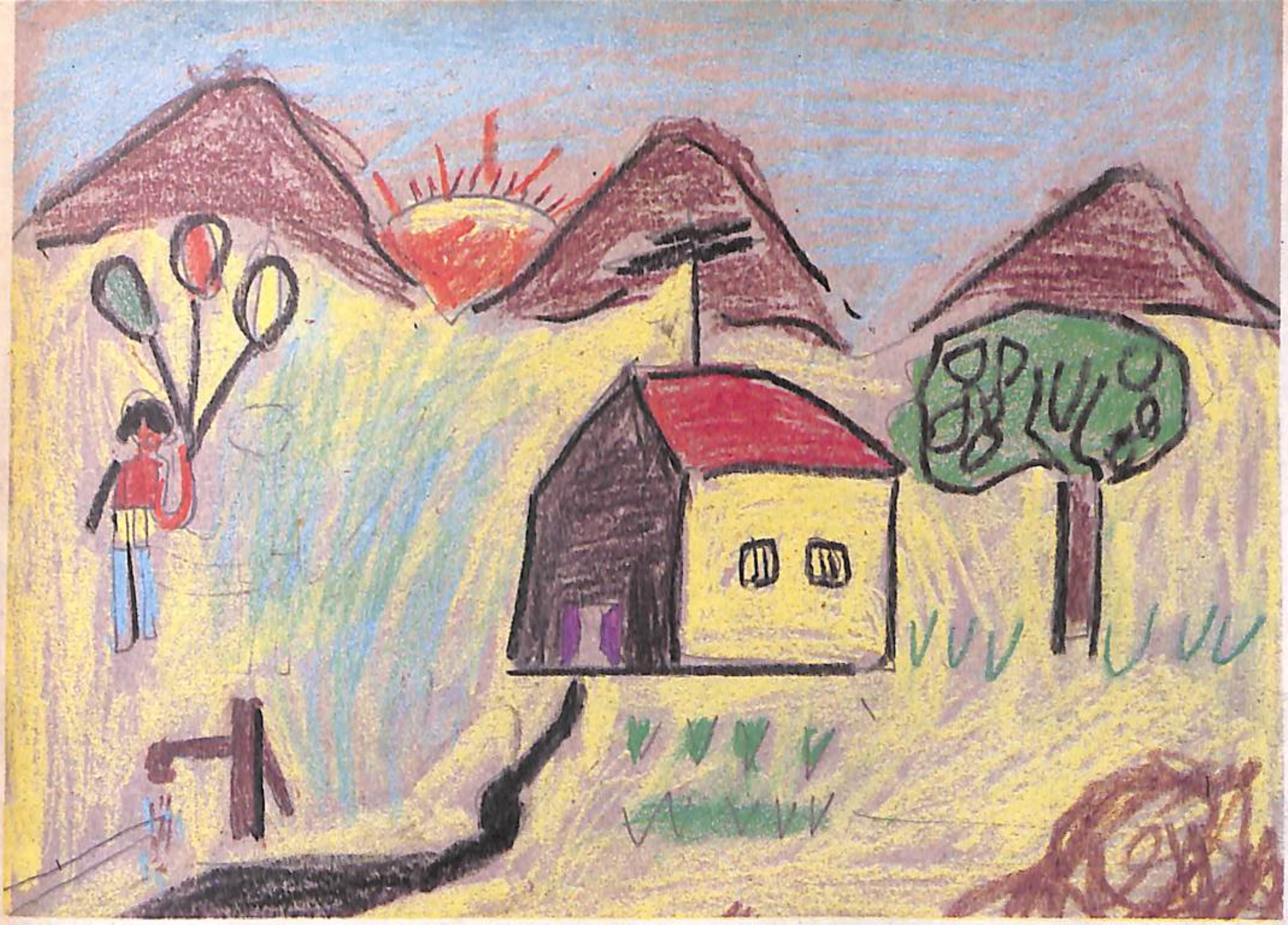
आरम्भ में लोग अपने इकट्ठा किए हुए अनाज में से कुछ बिखर जाने के कारण उसकी बुआई अनजाने ही करते थे। इसके बाद उन्होंने अनाज को जानकर बोने के लिए बिखेरना शुरू कर दिया।

अनाज के गाड़े जाने और फिर जीवित हो जाने के बारे में कितनी ही जातियों में अभी तक कथाएँ और आख्यान प्रचलित हैं।

(अगले अंक में जारी)

'मनुष्य महाबली कैसे बना।' से साभार

प्रस्तुति : राजेश उत्साही



राहुल आप्टे, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.



संकेत पी. मेगानी, सातवीं, भावनगर, गुजरात

 पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/94



सौम्या सुरेश, भोपाल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना